सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 79, नई दिल्ली । शुक्रवार, 31 मई 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

कोशिश हमें अंतिम क्षण तक करनी चाहिए जीवन में सफलता मिले या ना मिले परंतु तजुर्बा तो मिलेगा ही।

03 प्रोबेशन काल में महिला शिक्षिकाओं को मिलेगा मातृत्व अवकाश

06 सुनो भई साधो

08 मल्लिकार्जुन खडगे -पीएम मोदी पर भडके ,कहा जिसको गांधी नहीं पता तो संविधान भी नहीं पता

जनता को अन्य राज्यों के लिए बस सेवा प्रदान करने में दिल्ली परिवहन विभाग से अधिक डीटीआईडीसी का योगदान

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली कश्मीरी गेट स्थित बस अड्डा जहा से जनता को अन्य राज्यों के लिए जाने की बस सेवा 12X 24 घण्टे उपलब्ध होती है का संचालन दिल्ली परिवहन विभाग द्वारा अपने ही द्वारा निर्मित एक कम्पनी डीटीआईडीसी को दिया हुआ है। दिल्ली में अन्य राज्यो से दिल्ली में आने वाली बसों को दिल्ली परिवहन विभाग की एसटीए शाखा से परमिट पर काउंटर साइन करवाना मोटर वाहन नियम में अनिवार्य है और काउंटर साइन प्राप्त बसों को ही दिल्ली में इन बस टर्मिनल के अन्दर से सवारी उतारने और चढ़ाने की आज्ञा मिलती रहीं थी। **हमारी जानकारी में आया की दिल्ली के कश्मीरी गेट स्थित बस अड्डा से एक कंपनी की इलेक्ट्रिक बसे दिल्ली से अन्य राज्यों के लिए सेवा प्रदान कर रही है** और उस कम्पनी की बसों को यहां पर बकायदा अन्य राज्यों की सरकारी बसो की तरह जगह और समय सारणी प्रदान की हुई है। इसके बारे में जब एक बस ऑपरेटर ने बस चलाने की इच्छा रखते हुए परिवहन विभाग की एसटीए शाखा से जानकारी प्राप्त करनी चाही तो वहा से जवाब मिला की हमारी जानकारी में ऐसी किसी कम्पनी की किसी भी बस के चलने या बस अड्डे में प्रवेश की सूचना नहीं ह.

अब प्रश्न यह उठता है की दिल्ली परिवहन विभाग की एसटीए शाखा जब अन्य राज्यों की सरकारी बसों को भी एग्रीमेंट के तहत जितनी बसों की इजाजत है सिर्फ उतनी ही बसो को यहां से सवारी उतारने ओर चढ़ाने की इजाजत देता है तो उस शाखा की जानकारी/ आज्ञा के बिना किसी प्राइवेट कंपनी की बसों को यहां से सवारी उतारने और चढ़ाने की इजाजत के साथ समय सारणी कैसे प्रदान हो गई। इसका अर्थ साफ है की इस स्थान के संचालन के लिए किस कम्पनी को परिवहन विभाग द्वारा नियत किया है उसके द्वारा यह इजाजत जारी की गई और वह भी दिखी परिवहन विभाग की एसटीए शाखा को जानकारी में दिए बिना। **ऐसे में फिर अन्य राज्यों से आने वाली बसों को परिवहन विभाग दिल्ली/ एसटीए शाखा से इजाजत लेना जरुरी क्यों ?** सुरक्षा की दृष्टि में किसी भी प्राइवेट कम्पनी द्वारा चालित बस सेवा से कहीं अधिक सुरक्षित राज्य सरकारो द्वारा चालित बस सेवा है, बड़ा सवाल ?

क्या डीटीआईडीसी को मोटर वाहन नियम/अधिनियम/ धारा के अन्तर्गत यह क्षमता दिल्ली परिवहन विभाग ने दी है या ?

कृप्या करके आर्डर की कापी/ नोटीफिकेशन जिसके तहत इन इलेक्ट्रिक बसों को दिल्ली आईएसबीटी के अंदर से चलने की इजाजत दी गई है प्रदान करने की कृपा करें और किसके द्वारा यह इजाजत दी दी गई है जानकारी प्रदान करे। -टोलवा

यातायात जाम की सूचना ट्रैफ़िक पुलिस कंट्रोल रूम हेल्पलाइन नंबर 0129-2267201 पर दे सकते हैं नागरिक : डीसीपी ट्रैफ़िक ऊषा

पुलिस आयुक्त राकेश आर्य के दिशा निर्देशानुसार एवं डीसीपी ट्रैफ़िक ऊषा के नेतृत्व में फ़रीदाबाद शहर में लगातार घटित हो रही यातायात जाम की समस्याओं को संज्ञान में लेते हुए यातायात पुलिस द्वारा आम नागरिकों की सुविधा एवं सुगम गंतव्य को सुनिश्चित करने के लिए ट्रैफ़िक हेल्पलाइन नंबर जारी किया गया है । यातायात पुलिस की नागरिकों से अपील है कि ट्रैफ़िक जाम की स्थिति में ट्रैफ़िक कंट्रोल रूम हेल्पलाइन नंबर 0129-2267201 पर कॉल करके यातायात जाम की सूचना प्रदान करें । ताकि तुरंत प्रभाव से यातायात जाम के संबंध में कार्यवाही सुनिश्चित की जा सके ।
#FaridabadPolice #dcfaridabad #haryanapolice #roadsafety #Faridabad

जाने सरदार देवेंद्र सिंह के बारे मे जिन्होंने अपना जीवन सड़क सुरक्षा को समर्पित किया हुआ है

परिवहन विशेष न्यूज

सरदार देवेंद्र सिंह सदस्य स्टेट रोड सेफ्टी काउंसिल हरियाणा सरकार, सदस्य मेंबर ऑफ पार्लिमेंट रोड सेफ्टी काउंसिल भारत सरकार एवं सदस्य रीजनल ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी फरीदाबाद, पलवल, मेवात, सदस्य नीति आयोग एवं फिट इंडिया भारत सरकार एवं एग्जीक्यूटिव सदस्य इंडियन रेडक्रॉस सोसइटी फरीदाबाद, सदस्य मोटीवेटर ब्लड डोनेशन इंडियन रेडक्रॉस सोसइटी फरीदाबाद एवं सदस्य जिला विधिक सेवा प्राधिकरण फरीदाबाद, पलवल, मेवात, सदस्य स्पेशल टास्क फोर्स स्वच्छ भारत मिशन हरियाणा सरकार, सदस्य चीफ मिनिस्टर गुड गवर्नेंस फरीदाबाद, सदस्य पॉलिथीन अभियान म्युन्सिपल कोपरशन फरीदाबाद, सदस्य स्मार्ट सिटी ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट फरीदाबाद, सीनियर रेल वार्डन सदस्य जनरल रेलवे पुलिस हरियाणा, सदस्य इंडियन अलायन्स ऑफ रोड सेफ्टी एनजीओ, फाउंडर रोड सेफ्टी ओमनी फाउंडेशन(रजि.) एवं फाउंडर चढ़दी कला रहे खालसा हरियाणा,

अपने जीवन में अब तक 55 बार खून रक्तदान करना सड़क सुरक्षा एवं थैलेसेमिआ बच्चों के लिए स्पेशल अचीवमेंट साल 2009 से साल 2024, तीन नेशनल अवॉर्ड जिला फरीदाबाद, (1.जिला विधिक सेवा प्राधिकरण फरीदाबाद , 2.इंडियन रेड क्रॉस सोसइटी फरीदाबाद 3.लीड बैंक सिंडिकेट बैंक फरीदाबाद), एक बार हरियाणा सरकार के गवर्नर द्वारा सम्मानित, पाँच बार चीफ मिनिस्टर हरियाणा सरकार से सम्मानित, पाँच बार मेंबर ऑफ पार्लियामेंट जिला फरीदाबाद पलवल से सम्मानित, पाँच बार ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर हरियाणा सरकार से सम्मानित, एक बार कृषि मंत्री हरियाणा सरकार से सम्मानित, पाँच बार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण फरीदाबाद एवं पलवल के सीजेएम (चीफ ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट) से सम्मानित, दस वार डिप्टी कमिश्नर, एसडीएम एवं पुलिस कमिश्नर जिला फरीदाबाद से सम्मानित, दस बार से ज्यादा इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी फरीदाबाद से सम्मानित एवम् अन्य राज्य एवं शहर की सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं से सम्मानित।

कार्य क्षेत्र: मैनेजर आईएसआर डॉक्टर ओ पी भल्ला फाउंडेशन, आईटी डिपार्टमेंट मानव रचना यूनिवर्सिटी एवं मैनेजर फरीदाबाद एजुकेशन काउंसिल फरीदाबाद

प्रीवियस कार्य : प्रोजेक्ट मैनेजर आईटी आपरेशन भारत सरकार नेशनल थर्मल पावर कोऑपरेशन, (तेरह साल) थर्ड पार्टी रोलैंड इंफोटेक प्राइवेट कंपनी, एंजेल सॉल्यूशन प्राइवेट एवं वीएम एंटरप्राइज चितरंजन पार्क एवं एंजेल्स सोलूशन्स प्राइवेट लिमिटेड कंपनी कालका जवाहर लाल यूनिवर्सिटी, ओसीसी दिल्ली यूनिवर्सिटी, आईआईटी दिल्ली, रुड़की, एनएचपीसी नैशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लिमिटेड, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र (एनआईसी), इंडियन ऑयल एनसीआर, इलेक्शन कमीशन ऑफ इंडिया, भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड(बी.एच.ई.एल), भारतीय रेलवे बोर्ड, कृषि भवन भारत सरकार, दिल्ली पुलिस, पंजाब स्टेट हेल्थ सर्विस पंजाब सरकार, पंजाब पुलिस, पंजाब स्टेट इलेक्ट्रिकल बोर्ड पंजाब सरकार, गूडीएआर इंडिया लिमिटेड, एनबीसीसी (इंडिया) लिमिटेड, टीकमशाह इंडिया लिमिटेड, जेसीबी इंडिया लिमिटेड, हैदराबाद इंडस्ट्रीज लिमिटेड, एबीबी इंडिया लिमिटेड, नेशनल इंसीट्यूट फाइनेंस मैनेजमेंट (अरुण जैटली), दक्षिण हरियाणा वितरण निगम लिमिटेड, वेरका मिल्क प्लांट पंजाब सरकार, आईबीएम दक्ष, एरिक्सन इंडिया, हीरो हौंडा इंडिया, एचसीएल डेल पेरोट सिस्टम नोएडा, इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड, एमएमटीसी लिमिटेड, गति कार्गो, बिरला सॉफ्टवेयर नोएडा , आरएमएसआई सॉफ्टवेयर नोएडा, डेंटल इंडिया, रयान इंटरनेशनल स्कूल, पंजाब नेशनल बैंक , एमएडीईयूएस इंडिया, एसपीआईयू भोपाल यूनिवर्सिटी मध्य प्रदेश, जिला पलवल, मेवात, रेवाड़ी, सोनीपत, करनाल, अम्बाला एवं दिल्ली , नोएडा

स्पेशल नोट :पंजाब के अंदर जिला होशियारपुर, जालंधर, लुधियाना , संगरूर एवं बरनाला में सड़क सुरक्षा के काम को करने का मौका मिला

आओ सभी एक साथ मिलकर चले अपने अपने गांव की ओर सरदार देवेंद्र सिंह

ई-मेल:
stateroadsafetycouncilmember@gmail.com
DLTFH2023@gmail.com
टवीटर :@rsofbd2012
मोबाइल नंबर :9643283909

जब तेज रफ्तार लग्जरी कारों ने मौत का तांडव मचाया, महीनेभर में देश में ऐसी चार घटनाएं

बीते कुछ वर्षों में तेज रफ्तार वाली सुपर लग्जरी कारों की वजह से होने वाली दुर्घटनाओं की एक श्रृंखला देखने को मिलती है। जो लापरवाही से गाड़ी चलाने के भयावह परिणामों को बयां करती है। और कई बार यह याद दिलाती है कि रफ्तार का रोमांच विनाश का कारण बन सकता है।

नई दिल्ली। पंजाब के एक शहर में एक 19 वर्षीय लड़के की बीएमडब्ल्यू की टक्कर से मौत तेज रफ्तार वाली सुपर लग्जरी कारों की वजह से होने वाली दुर्घटनाओं की श्रृंखला में सबसे ताजा घटना है। जो लापरवाही से गाड़ी चलाने के भयावह परिणामों को बयां करती है। और कई बार यह याद दिलाती है कि रफ्तार का रोमांच विनाश का कारण बन सकता है।

इस महीने ही देश में ऐसी चार घटनाएं हो चुकी हैं। मंगलवार रात पंजाब के जीरकपुर शहर में, एक कार ने मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी, जिससे तीन युवक हवा में उछल गए। एक की मौके पर ही मौत हो गई और अन्य दो गंभीर रूप से घायल हो गए। कार चालक, जो मोहाली का रहने वाला था, उसे गिरफ्तार कर लिया गया और फिर जमानत पर रिहा कर दिया गया।

ग्यारह दिन पहले, पुणे में मोटरसाइकिल पर सवार दो आईटी पेशेवरों को कथित तौर पर नशे में धुत्त 17 वर्षीय लड़के द्वारा चलाए जा रहे तेज रफ्तार वाले पोर्श ने रौंद दिया। आईटी सेक्टर में काम करने वाले अनीश अवधिया और अश्विनी कोष्ठा दोनों की मौत हो गई।

तेज रफ्तार कारें अक्सर दुर्घटनाओं में शामिल रही हैं। जो वाहनों में सवार लोगों सहित शामिल लोगों के लिए घातक हो जाती हैं।

पुणे में 19 मई को हुए हादसे से दो दिन पहले, नोएडा में एक तेज रफ्तार वाली बीएमडब्ल्यू ने सुबह 6 बजे एक ई-रिक्शा को टक्कर मार दी। जिसमें एक नर्स सहित दो लोगों की मौत हो गई और तीन लोग घायल हो गए। उत्तर प्रदेश के इस शहर में 26 मई की सुबह एक और जानलेवा हादसा हुआ। जिसमें एक ऑडी कार ने 64 वर्षीय व्यक्ति को टक्कर मार दी, जिससे मौके पर ही उनकी मौत हो गई। इसके बाद कार तेजी से भाग गई।

सेक्टर-53 के गिझोड़ गांव के रहने वाले मृतक जनक देव शाह दूध लेने के लिए सड़क पार कर रहे थे।

उत्तर प्रदेश का गौतमबुद्ध नगर जिला, जिसमें नोएडा और ग्रेटर नोएडा शामिल हैं, पिछले साल 1,176 सड़क दुर्घटनाओं का गवाह बना। जिसमें 470 लोगों की मौत हुई और 858 लोग घायल हुए।

आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, जिले में 2022 में ऐसी 437 मौतें हुई थीं और 856 लोग घायल हुए थे।

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने अपनी रिपोर्ट "भारत में सड़क दुर्घटनाएं 2022" में बताया कि 2022 में पूरे देश में 4.61 लाख सड़क दुर्घटनाएं हुईं। जिनमें 1.68 लाख लोगों की मौत हुई और 4.43 लाख लोग घायल हुए।

ट्रैफिक नियमों के उल्लंघनों के विभिन्न मामलों में, कुल 1.68 लाख मौतों में से 1.19 लाख मौतों के लिए तेज रफ्तार जिम्मेदार थी।

पिछले साल अगस्त में, हरियाणा के नूह में दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे पर एक रोल्स रॉयस फैंटम के पेट्रोल टैंकर से टकराने के बाद एक दुर्घटना में दो लोगों की मौत हो गई थी।

भारत में जल्द उपलब्ध हो सकती है लिथियम आयन बैटरी से बेहतर और सस्ती दर में बैटरी जाने क्या बता रहे हैं शोधकर्ता

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। लिथियम-आयन बैटरियाँ ऊर्जा भंडारण प्रौद्योगिकियों में सबसे आगे रही हैं। हालाँकि, लिथियम की उपलब्धता सीमित है। परिणामस्वरूप, ऊर्जा-भंडारण प्रणालियों की बढ़ती माँग ने रिचार्जेबल बैटरियों के लिए कम लागत वाली और अधिक सुलभ सामग्रियों की खोज को बढ़ावा दिया है। समुद्री जल और नमक जमा में लगभग असीमित सोडियम (Na) संसाधनों के कारण सोडियम-आयन बैटरियाँ (SIB) एक आशाजनक उम्मीदवार हैं।लंबे चक्र की स्थिरता में सुधार और SIB के लिए एक पतली ठोस इलेक्ट्रोलाइट इंटरफ़ेस (SEI) प्राप्त करने के लिए सकारात्मक इलेक्ट्रोड (कैथोड), नकारात्मक इलेक्ट्रोड (एनोड) और इलेक्ट्रोलाइट्स के लिए सामग्री में सुधार के लिए बहुत सारे शोध किए गए हैं। SEI प्रारंभिक चार्ज/डिस्चार्ज चक्रों के दौरान एनोड सतह पर बनने वाली एक निष्क्रिय परत है, जो इलेक्ट्रोलाइट के साथ प्रतिक्रियाओं के कारण एनोड को खराब होने से रोकती है।

बैटरी के प्रदर्शन के लिए एक अच्छी तरह से गठित SEI महत्वपूर्ण है। इस संदर्भ में, हार्ड कार्बन (HC) एक आशाजनक एनोड सामग्री के रूप में उभरा है। फिर भी, इसका व्यावसायीकरण मुश्किल रहा है क्योंकि यह इलेक्ट्रोलाइट की बढ़ती खपत के कारण एक असमान, मोटी और कमजोर SEI बनाता है, जो चार्जिंग/डिस्चार्जिंग स्थिरता और प्रतिक्रिया गति को कम करता है।

इन मुद्दों को हल करने के लिए, कार्बोक्सिमिथाइल सेलुलोज लवण, पॉली (ऐक्रेलिक एसिड) व्युत्पन्न और पॉली (विनाइलिडीन फ्लोराइड) (पीवीडीएफ) जैसे बाइंडरों का उपयोग किया गया है। हालांकि, ये बाइंडर एनोड में Na आयनों के धीमे प्रसार का कारण बनते हैं, जिससे HC-आधारित SIB की खराब दर क्षमता होती है।पारंपरिक पॉली (ऐक्रेलिक एसिड) बाइंडरों के विपरीत, पीएफए एक उच्च-कार्यात्मक घनत्व वाला बहुलक है जिसमें मुख्य श्रृंखला के सभी कार्बन परमाणुओं पर कार्बोक्सिलिक एसिड मौजूद होता है। यह पीएफए को अत्यधिक केंद्रित आयन हॉपिंग साइटों की उपस्थिति के कारण Na आयन प्रसार में सुधार करने और इलेक्ट्रोड से अधिक मजबूती से चिपकने में सक्षम बनाता है। इसके अतिरिक्त, पीएफए बाइंडर पानी में घुलनशील और गैर-विषाक्त होते हैं, और इसका पूर्ववर्ती, फ्यूमेरिक एसिड, एक जैव-आधारित बहुलक है।शोधकर्ताओं ने पॉली (फ्यूमरेट एस्टर) के हाइड्रोलिसिस के माध्यम से पीएफए को संश्लेषित किया। इसके बाद, उन्होंने एचसी, सुपर पी कार्बन और पीएफए को पानी में मिलाकर एक जलीय घोल बनाया, जिसे तांबे की पन्नी पर लेपित किया गया और एचसी एनोड बनाने के लिए रात भर सुखाया गया। इस एनोड का उपयोग काउंटर इलेक्ट्रोड के रूप में सोडियम मेटल डिस्क और इलेक्ट्रोलाइट के रूप में 1.0 एम NaClO 4 के साथ एनोड-प्रकार के अर्ध-सेल के निर्माण के लिए किया गया था।

शोधकर्ताओं ने इलेक्ट्रोड घटकों और कॉपर करंट कलेक्टर के बीच आसंजन पर बाइंडर प्रभाव का परीक्षण करने के लिए एक छीलने का परीक्षण किया। उल्लेखनीय रूप से, SIB के लंबे जीवन के लिए मजबूत आसंजन की आवश्यकता होती है। PFA-बाइंडर युक्त HC इलेक्ट्रोड का छीलने का बल 12.5 N पाया गया, जो 11.5 N वाले पॉली (ऐक्रेलिक एसिड)-HC इलेक्ट्रोड और 9.8 N छीलने वाले बल वाले PVDF-HC इलेक्ट्रोड की तुलना में काफी अधिक था।

एनोड हाफ-सेल को विभिन्न इलेक्ट्रोकेमिकल और बैटरी प्रदर्शन परीक्षणों के अधीन किया गया था। चार्जिंग/डिस्चार्जिंग चक्र परीक्षणों में, एनोड हाफ-सेल ने क्रमशः 30 mAg -1 और 60 mAg -1 के वर्तमान घनत्व पर 288 mAhg -1 और 254 mAhg -1 की विशिष्ट क्षमताएँ दिखाईं , जो PVDF और पॉली (ऐक्रेलिक एसिड)-प्रकार के इलेक्ट्रोड से काफी बेहतर हैं। इसने उत्कृष्ट दीर्घ-चक्र स्थिरता भी दिखाई, 250 चक्रों के बाद अपनी क्षमता का 85.4% बनाए रखा।एनोड ने एक पतली SEI बनाई और उसमें दरार या एक्सफोलिएशन नहीं दिखा, जिसने हाफ-सेल की बढ़ी हुई स्थायित्व में योगदान दिया। इसके अलावा, PFA-HC इलेक्ट्रोड के लिए Na आयन प्रसार गुणांक 1.9 × 10 -13 cm 2 /s था, जो पॉली (ऐक्रेलिक एसिड)-HC और PVDF-HC इलेक्ट्रोड से अधिक था ।

इन निष्कर्षों से बेहतर इलेक्ट्रोकेमिकल प्रदर्शन वाले एसआईबी के विकास की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है। भविष्य की ओर देखते हुए, पॉलिमर सामग्री में, विभिन्न पॉलिमर प्रतिक्रियाओं के माध्यम से विभिन्न संरचनात्मक संशोधन संभव हैं, जो प्रदर्शन को और बेहतर बना सकते हैं। भविष्य में, हमारा लक्ष्य इसके व्यावसायिक कार्यान्वयन के लिए कंपनियों के साथ संयुक्त अनुसंधान करना है। इसके अतिरिक्त, एक जल-घुलनशील और गैर-विषाक्त बाइंडर सामग्री के रूप में जो स्थायित्व में सुधार करती है, इसे न केवल एसआईबी में बल्कि ऊर्जा भंडारण उपकरणों की एक विस्तृत श्रृंखला में भी लागू किया जा सकता है।

कुल मिलाकर, यह नई सामग्री एसआईबी पर आधारित कम लागत वाले ऊर्जा उपकरणों के अधिक व्यापक उपयोग को बढ़ावा दे सकती है, जिससे अधिक ऊर्जा-कुशल और कार्बन-तटस्थ समाज का निर्माण हो सकता है।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

इनसाइड

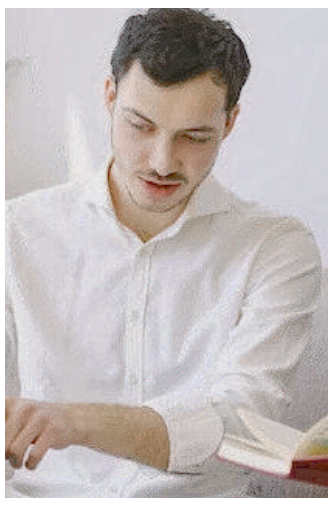

ऑफिस में महिला कलीग से बात करें तो जरूर रखें इन बातों का ख्याल, बन जाएंगे उनके फेवरेट, बॉन्डिंग भी होगी स्ट्रॉन्ग

ऑफिस में फीमेल कलीग से बात करना कई पुरुषों के लिए आसान नहीं होता है. ऐसे में पुरुष महिला कलीग के सामने भाषा पर ध्यान देने से लेकर स्माइल करने, मोटिवेट रखने जैसे कुछ टिप्स अपनाकर उनके साथ हेल्दी और फ्रेंडली रिलेशनशिप डेवलप कर सकते हैं.

ऑफिस में पुरुष और महिला कलीग्स दोनों मौजूद रहते हैं. ऐसे में कई मेल कलीग्स आपस में काफी अच्छे दोस्त होते हैं मगर फीमेल कलीग्स के सामने ज्यादातर पुरुष असहज महसूस करते हैं. आप चाहें तो महिला सहकर्मी से बात करते समय कुछ चीजों का खास ख्याल रखकर ना सिर्फ उनके फेवरेट बन सकते हैं, बल्कि उनके साथ अपनी बॉन्डिंग को भी स्ट्रॉन्ग बना सकते हैं.

फीमेल कलीग के सामने कई सारे पुरुष नर्वस हो जाते हैं, जिसके चलते वे महिलाओं से खुलकर बात नहीं कर पाते हैं. इसका असर आपके काम पर भी पड़ सकता है. ऐसे में कुछ बातों को ध्यान में रखकर आप फीमेल कलीग्स से बेस्ट बॉन्डिंग बना सकते हैं. आइए जानते हैं ऑफिस में महिला कलीग से बात करने के टिप्स.

भाषा पर संयम रखें

अपने ऑफिस की किसी भी महिला कर्मचारी से बात करते समय पुरुषों को भाषा पर ध्यान देना जरूरी होता है. दरअसल, पुरुष आपस में तुम या तू करके बात करते हैं मगर महिलाओं के सामने ऐसे पेश आने से आपका इम्प्रेशन खराब हो सकता है. वहीं, फीमेल कलीग के सामने बॉडी लैंग्वेज भी सही रखें, जिससे वे भी आपके सामने सहज महसूस कर सकें.

स्माइल करना है जरूरी

अगर आप महिला कलीग से बात करने में असहज महसूस करते हैं तो आप उन्हें दूर से देखकर मुस्कुरा भी सकते हैं. फीमेल कलीग से आई कॉन्टैक्ट होने पर आपकी एक मुस्कान भी काफी है. इससे आप बिना बोले उनके साथ स्ट्रॉन्ग बॉन्डिंग बना सकेंगे और आपका रिश्ता मजबूत होने लगेगा.

काम पर ध्यान दें

महिला कलीग से स्ट्रॉन्ग बॉन्डिंग बनाने के लिए आप काम में उनकी मदद मांग सकते हैं. इससे ना सिर्फ ऑफिस का प्रोजेक्ट जल्दी खत्म हो जाएगा, बल्कि काम के बीच में हंसी-मजाक करने से आपका रिश्ता भी बेहतर होने लगेगा. लेकिन, काम के दौरान पॉजिटिविटी बरकरार रखें और साथी कलीग की बुराई करने से बचें.

मोटिवेट करें

महिला कलीग को काम के प्रति मोटिवेट रखकर आप उनसे स्ट्रॉन्ग बॉन्डिंग बना सकते हैं. इससे फीमेल कलीग की ऑफिस परफॉर्मेंस भी बेहतर होने लगेगी. साथ ही उनका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा, जिससे आप फीमेल कलीग के फेवरेट बन जाएंगे.

टी ब्रेक पर जाएं

ऑफिस के काम में लोगों को फीमेल कलीग से बात करने का मौका कम ही मिलता है. ऐसे में आप महिला कलीग को चाय या कॉफी का ऑफर दे सकते हैं मगर ध्यान रहे कि हर रोज महिला कलीग के साथ टी ब्रेक पर ना जाएं. इससे फीमेल कलीग के साथ आप बेस्ट प्रोफेशनल रिलेशन बना सकेंगे.

भारत के इतिहास में इन वीरांगनाओं का नाम नहीं भुलाया जा सकता

इतिहास गवाह है कि महिलाओं ने समय-समय पर अपनी बहादुरी और साहस का प्रयोग कर पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर चली हैं। आज हम अपनी खबर में ऐसी ही महिलाओं के शौर्य और वीरता की बात करेंगे जिन्होंने क्रांतिकारी गतिविधियों में अपना योगदान निडर होके दिया और कुछ ऐसी भी वीरांगनाएँ जिन्होंने असंभव प्रयास करते हुए किसी भी युग में न भूलने वाला काम किया और अमर हो गयी।

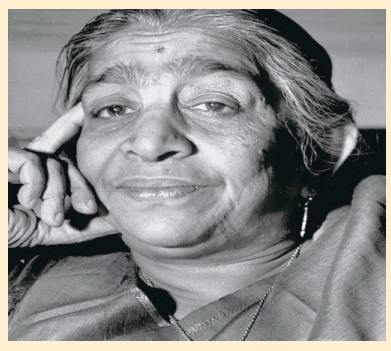

रानी लक्ष्मीबाई (19 नवंबर – 17 जून 1858)

भारत में जब भी महिलाओं के सशक्तिकरण की बात होती है तो महान वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की चर्चा ज़रूर होती है। रानी लक्ष्मीबाई न सिर्फ़ एक महान नाम है बल्कि वह एक आदर्श हैं उन सभी महिलाओं के लिए जो खुद को बहादुर मानती हैं और उनके लिए भी एक आदर्श हैं जो महिलाएं ये सोचती है कि 'वह महिलाएं हैं तो कुछ नहीं कर सकती.' देश के पहले स्वतंत्रता संग्राम (1857) में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली रानी लक्ष्मीबाई के अप्रतिम शौर्य से चकित अंग्रेजों ने भी उनकी प्रशंसा की थी और वह अपनी वीरता के किस्सों को लेकर किंवदंती बन चुकी हैं।

ऊषा मेहता सावित्रीबाई फूले (25 मार्च 1920 – 11 अगस्त 2000)

कांग्रेस रेडियो जिसे 'सीक्रेट कांग्रेस रेडियो' के नाम से भी जाना जाता है, इसे शुरू करने वाली ऊषा मेहता ही थीं. भारत छोड़ो आंदोलन (1942) के दौरान कुछ महीनों तक कांग्रेस रेडियो काफ़ी सक्रिय रहा था। इस रडियो के कारण ही उन्हें पुणे की येरवाड़ा जेल में रहना पड़ा। वे महात्मा गांधी की अनुयायी थीं।

बेगम हज़रत महल (1820 – 7 अप्रैल 1879)

जंगे-आज़ादी के सभी अहम केंद्रों में अवध सबसे ज़्यादा वक्त तक आज़ाद रहा। इस बीच बेगम हज़रत महल ने लखनऊ में नए सिरे से शासन संभाला और बगावत की कयादत की। तकरीबन पूरा अवध उनके साथ रहा और तमाम दूसरे ताल्लुकेदारों ने भी उनका साथ दिया। बेगम हजरत महल की हिम्मत का इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि उन्होंने मटियाबुर्ज में जंगे-आज़ादी के दौरान नज़रबंद किए गए वाजिद अली शाह को छुड़ाने के लिए लार्ड कैनिंग के सुरक्षा दस्ते में भी सेंध लगा दी थी।

ऐनी बेसेंट (1 अक्टूबर 1857 – 20 सितम्बर 1933)

थियोसोफिकल सोसाइटी और भारतीय होम रूल आंदोलन में अपनी विशिष्ट भागीदारी निभाने वाली ऐनी बेसेंट का जन्म 1 अक्टूबर, 1847 को तत्कालीन यूनाइटेड किंगडम ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड के लंदन शहर में हुआ था। 1890 में ऐनी बेसेंट हेलेना ब्लावत्सकी द्वारा स्थापित थियोसोफिकल सोसाइटी, जो हिंदू धर्म और उसके आदर्शों का प्रचार-प्रसार करती हैं, की सदस्या बन गईं. भारत आने के बाद भी ऐनी बेसेंट महिला अधिकारों के लिए लड़ती रहीं। महिलाओं को वोट जैसे अधिकारों की मांग करते हुए ऐनी बेसेंट लागातार ब्रिटिश सरकार को पत्र लिखती रहीं। भारत में रहते हुए ऐनी बेसेंट ने स्वराज के लिए चल रहे होम रूल आंदोलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

मैडम भीकाजी कामा (24 सितम्बर 1861 – 13 अगस्त 1936)

मैडम भीकाजी कामा ने आज़ादी की लड़ाई में एक सक्रिय भूमिका निभाई थी। इनका नाम इतिहास के पन्नोंज पर दर्ज है। स्वतंत्रता की लड़ाई में उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। वो बाद में लंदन चली गईं और उन्हें भारत आने की अनुमति नहीं मिली।

कस्तूरबा गांधी (11 अप्रैल 1869 – 22 फरवरी 1942)

मोहनदास करमचंद गांधी ने 'बा' के बारे में खुद स्वीकार किया था कि उनकी दृढ़ता और साहस खुद गांधीजी से भी उन्न त थे।वह एक दृढ़ आत्म शक्ति वाली महिला थीं और गांधीजी की प्रेरणा भी। उन्होंने लोगों को शिक्षा, अनुशासन और स्वास्थ्य से जुड़े बुनियादी सबक सिखाए और आज़ादी की लड़ाई में पर्दे के पीछे रह कर सराहनिय कार्य किया है।

सरोजिनी नायडू (13 फरवरी 1879 – 2 मार्च 1949)

भारत कोकिला सरोजिनी नायडू सिर्फ़ स्वएतंत्रता संग्राम सेनानी ही नहीं, बल्कि बहुत अच्छी कवियत्री भी थीं। गोपाल कृष्ण गोखले से एक ऐतिहासिक मुलाक़ात ने उनके जीवन की दिशा बदल दी। सरोजिनी नायडू ने खिलाफ़त आंदोलन की बागडोर संभाली और अंग्रेजों को भारत से निकालने में अहम योगदान दिया।

कमला नेहरू (1 अगस्त 1899 – 28 फरवरी 1936)

कमला विवाह के बाद जब इलाहाबाद आईं तो एक सामान्यप, कम उम्र की नई नवेली दुल्हन भर थीं. लेकिन समय आने पर यही शांत स्वाभाव की महिला लौह स्त्रीव साबित हुई, जो धरने-जुलूस में अंग्रेजों का सामना करती, भूख हड़ताल करती और जेल की पथरीली धरती पर सोती थी। नेहरू के साथ-साथ कमला नेहरू और फ़िर इंदिरा की प्रेरणाओं में देश की आज़ादी ही सर्वोपरि थी। असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन में उन्होंने बढ़-चढ़कर शिरकत की थी।

अरूणा आसफ़ अली (16 जुलाई 1909 – 26 जुलाई 1996)

अरूणा आसफ़ अली को भारत की आज़ादी के लिए लड़ने वाली एक सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में पहचाना जाता है। उन्होंने एक कार्यकर्ता होने के नाते नमक सत्याग्रह में भाग लिया और लोगों को अपने साथ जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की, साथ ही वे 'इंडियन नेशनल कांग्रेस' की एक सक्रिय सदस्य थीं।

विजयलक्ष्मी पंडित (18 अगस्त 1900 – 1 दिसम्बर 1990)

एक संपन्नय, कुलीन घराने से ताल्लुहक रखने वाली और जवाहरलाल नेहरू की बहन विजयलक्ष्मीं पंडित भी आज़ादी की लड़ाई में शामिल थीं. सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें जेल में बंद किया गया था। वे संयुक्तम राष्ट्र की पहली भारतीय महिला अध्यक्ष थीं और स्वतंत्र भारत की पहली महिला राजदूत थीं जिन्होंने मास्को, लंदन और वॉशिंगटन में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

लूज हो रहा सेल्फ कॉन्फिडेंस? महिलाएं इन 7 टिप्स की लें मदद, दमदार बन जाएगी पर्सनैलिटी

जिंदगी में सफल और कामयाब व्यक्ति बनने के लिए आत्मविश्वास का होना बेहद जरूरी होता है. हालांकि कुछ लोगों में कॉन्फीडेंस का लेवल अक्सर कम रहता है. ऐसे में ड्रेसिंग सेंस पर ध्यान देने से लेकर खुद पर विश्वास रखने और आलोचनाओं को नजरअंदाज करके आप बोल्ड और कॉन्फिडेंट पर्सनैलिटी बनकर उभर सकते हैं.

शानदार पर्सनैलिटी के लिए कॉन्फिडेंस हाई होना बेहद जरूरी होता है. खासकर करियर को बेहतर बनाने में आत्मविश्वास का अहम योगदान होता है. हालांकि कुछ लोगों में अक्सर सेल्फ कॉन्फिडेंस (Self confidence) की कमी देखने को मिलती है. ऐसे में अगर आपका कॉन्फिडेंस भी लूज हो रहा है. तो आप कुछ आसान टिप्स की मदद ले सकते हैं. जिससे आपका आत्मविश्वास मिनटों में बढ़ता दिखाई देने लगेगा.

सेल्फ कॉन्फिडेंस लोगों की पर्सनैलिटी में चार चांद लगाने का काम करता है. ऐसे में आत्मविश्वास को ज्यादातर लोगों का हैप्पीनेस सीक्रेट भी माना जाता है. वहीं कॉन्फिडेंस की कमी होने के कारण लोगों को लाइफ में काफी सफर करना पड़ सकता है. इसलिए हम आपको बताने जा रहे हैं कॉन्फिडेंस बूस्ट करने के कुछ आसान टिप्स, जिसकी मदद से आप खुशमिजाज और बोल्ड पर्सनैलिटी बनकर उभर सकते हैं.

ड्रेसिंग सेंस पर फोकस करें

ड्रेसिंग सेंस आपके लिए कॉन्फिडेंस बूस्टर साबित हो सकता है. ऐसे में अच्छी ड्रेस, मैचिंग फुटवियर और गुड लुक कैरी करके आप अंदर से काफी कॉन्फिडेंट महसूस कर सकते हैं.

कम्युनिकेशन पर ध्यान दें

कॉन्फिडेंट पर्सनैलिटी बनने के लिए आपको कम्युनिकेशन स्किल्स पर भी ध्यान देना चाहिए. ऐसे में अलग-अलग लोगों से बातचीत के दौरान अपने शब्दों और बॉडी लैंग्वेज पर फोकस करें. इससे आपकी कम्युनिकेशन स्किल्स में सुधार आएगा और आप कॉन्फिडेंट फील करने लगेंगे.

खुद पर विश्वास रखें

खुद पर भरोसा ना होने पर लोग अक्सर कन्फ्यूज और डल महसूस करते हैं. ऐसे में कॉन्फिडेंस बढ़ाने के लिए आपको खुद पर भरोसा रखना जरूरी होता है. इसलिए दूसरों की बातों पर गौर करने की बजाए अपने फैसलों का सम्मान करें.

गलतियों से ना डरें

गलतियों के डर से लोग अक्सर कुछ नया करना अवॉइड कर देते हैं. जिससे आपका अत्मविश्वास कम हो सकता है. ऐसे में आलोचनाओं का डट कर सामना करें और हमेशा नया सीखने के प्रति तत्पर रहें. इससे आपका कॉन्फिडेंस बढ़ने लगेगा.

दूसरों से अलग बनें

कई बार दूसरों को कॉपी करने के चक्कर में लोग अपनी यूनीक पर्सनैलिटी से समझौता कर लेते हैं. हालांकि खुद को दूसरों से अलग बनाकर आप कॉन्फिडेंट महसूस कर सकते हैं. इसलिए किसी को कॉपी करने की बजाए अपनी स्किल्स को निखारने पर फोकस करें.

डर से लड़ें

कई बार हार या आलोचनाओं के डर से लोग अपने दिल की नहीं सुनते हैं. जिसके चलते आप अंदर ही अंदर घुट कर रह जाते हैं. इसलिए डर से भागने की बजाए इसका डट कर सामना करें और अपनी बात रखने में बिल्कुल ना हिचकिचाएं. इससे आपका कॉन्फिडेंस आसानी से बूस्ट होने लगेगा.

लोगों की बातों को करें नजरअंदाज

कुछ लोग दूसरों की बातों को अक्सर दिल से लगा लेते हैं. जिससे आप खुद अपनी सफलता में बाधक बन जाते हैं. इसलिए लोगों की बातों को नजरअंदाज करने की कोशिश करें और खुद अपनी गलतियों से सीख लेकर जिंदगी में आगे बढ़ें. इससे आप कॉन्फीडेंट और बोल्ड पर्सनैलिटी बनकर उभरेंगे.

50 के बाद भी रहना है हेल्दी, 4 विटामिन्स को करें डाइट में शामिल, कम दिखने लगेगी उम्र, हमेशा रहेंगी फिट

पचास की उम्र के बाद महिलाओं में कमजोरी आने लगती है. ऐसे में महिलाएं अपनी बढ़ती उम्र को कम दिखाने की पूरी कोशिश करती हैं. वहीं, तमाम नुस्खे आजमाने के बाद भी महिलाएं अपनी ऐज को छुपाने में नाकाम हो जाती हैं. अगर आप 50 की हो रही हैं तो कुछ जरूरी विटामिन्स को डाइट (Diet tips) में एड करके आप उम्र के असर को आसानी से हाइड कर सकती हैं.

50 प्लस वुमेंस में विटामिन की कमी होना काफी आम बात है. ऐसे में विटामिन रिच डाइट को अवॉयड करने से ना सिर्फ महिलाएं फिजिकली वीक महसूस करने लगती हैं, बल्कि आपकी उम्र भी ज्यादा दिखती है. मेडिकलन्यूज़टुडे के मुताबिक, हम आपको बताते हैं 5 एसेंशियल विटामिन सप्लीमेंट्स के नाम, जिनका सेवन करके आप 50 के बाद भी खुद को यंग रख सकती हैं.

विटामिन बी 12

विटामिन बी 12 को एनर्जी का बेस्ट सोर्स माना जाता है. मगर बढ़ती उम्र के साथ शरीर में विटामिन बी 12 की कमी देखने को मिलने लगती है. ऐसे में दूध, डेयरी प्रोडक्ट्स, एनिमल प्रोडक्ट्स, चिकन, फिश, अंडा, मीट और खमीर जैसी चीजों को डाइट में शामिल करके आप विटामिन बी 12 की कमी पूरी कर सकती हैं.

कैल्शियम

कैल्शियम रिच डाइट हड्डियों को मजबूत बनाने में मददगार होती है. साथ ही कैल्शियम से भरपूर चीजें खाने से महिलाओं में फ्रैक्चर होने की संभावना कम रहती है. ऐसे में कैल्शियम की कमी पूरी करने के लिए आप ड्राई फ्रूट्स, बीज, डेयरी प्रोडक्ट्स, मछली, बीन्स, दाल, हरी पत्तेदार सब्जियों, सोयाबीन और टोफू का सेवन कर सकती हैं.

विटामिन डी

50 से ज्यादा उम्र वाली महिलाओं के लिए विटामिन डी का सेवन भी जरूरी होता है. विटामिन डी शरीर की इम्यूनिटी बढ़ाने के साथ-साथ डिप्रेशन, एंग्जाइटी और थकान को दूर रखने में सहायक होता है. वहीं डेयरी प्रोडक्ट, अंडा और फिश को विटामिन डी का बेहतर स्रोत माना जाता है. इसके अलावा बॉडी में विटामिन डी की कमी पूरी करने के लिए आप कुछ देर धूप में भी बैठ सकती हैं.

विटामिन बी 6

50 के बाद शरीर में विटामिन बी 6 की कमी होने लगती है. ऐसे में फिट और हेल्दी रहने के लिए विटामिन बी 6 से भरपूर आहार लेना जरूरी हो जाता है. वहीं गाजर, पालक, केला, दूध, चिकन और कलोंजी को विटामिन बी 6 का बेस्ट सोर्स माना जाता है.

10 साल में 7 डिग्री बढ़ा तापमान, बढ़ रही गर्म क्षेत्रों की भी संख्या; स्टडी में सामने आए

परिवहन विशेष न्यूज

एक अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार मई 2014 में औसत तापमान 30-33 डिग्री सेल्सियस के बीच था। कुछ ही इलाके ऐसे थे जहां का तापमान 33.1 से 34.0 डिग्री सेल्सियस रहा। इसमें भी ज्यादातर उत्तरी एवं दक्षिण पश्चिमी दिल्ली के बाहरी इलाके थे। लेकिन 2022 में दिल्ली के ज्यादातर इलाकों का तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर रहा। पूर्वी व मध्य दिल्ली में 36-40 डिग्री सेल्सियस के बीच रहे।

नई दिल्ली। देश की राजधानी साल दर साल और गर्म होती जा रही है। तापमान ही नहीं बढ़ रहा बल्कि यहां ऐसे क्षेत्रों (हीट आइलैंड) की संख्या भी बढ़ती जा रही है, जहां का तापमान दिल्ली के औसत तापमान से अधिक जा रहा है। सेंटर फार साइंस एंड एन्वायरमेंट (सीएसई) की एक अध्ययन रिपोर्ट में सामने आया है कि पिछले दस साल के दौरान राजधानी के औसत तापमान में भी सात डिग्री की वृद्धि दर्ज की गई है।

इस अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार मई 2014 में औसत तापमान 30-33 डिग्री सेल्सियस के बीच था। कुछ ही इलाके ऐसे थे, जहां का तापमान 33.1 से 34.0 डिग्री सेल्सियस रहा। इसमें भी ज्यादातर उत्तरी एवं दक्षिण पश्चिमी दिल्ली के बाहरी इलाके थे। लेकिन 2022 में दिल्ली के ज्यादातर इलाकों का तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर रहा। पूर्वी व मध्य दिल्ली के कुछ इलाके ही 36-40 डिग्री सेल्सियस के बीच रहे।

कंक्रीट वाले इलाकों की हवा पूरी तरह शुष्क

सेटेलाइट डेटा के आधार पर की गई मैपिंग से पता चला कि दिल्ली के औसत तापमान में बढ़ोतरी की शुरुआत 1998 से हुई थी, लेकिन 2014 के बाद से इसमें तेजी से इजाफा हुआ। एक दशक के तापमान में सात डिग्री का फर्क आ गया है। विशेषज्ञ बताते हैं कि सामान्य से अधिक गर्म रहने वाले इलाके स्थानीय मौसम पर भी सीधा असर डाल रहे हैं। गर्म इलाकों में अपेक्षाकृत कम वर्षा होती है, जबकि हरे-भरे इलाकों में ज्यादा। वजह, हरे क्षेत्र हवा की नमी खींच लेते हैं, जबकि कंक्रीट वाले इलाकों की हवा पूरी तरह शुष्क रहती है।

अब अगर इस साल की बात करें तो नजफगढ़, मुंगेशपुर, जाफरपुर जैसे बाहरी दिल्ली के इलाकों में ज्यादा तापमान रिकार्ड हो रहा है। कारण यही कि इस समय फसलें कट गई हैं और तुलनात्मक रूप से हरियाली नहीं है। सघन आबादी वाले यह इलाके पथरीले भी हैं। इसके मिले-जुले असर से

यहां का तापमान बाकी दिल्ली से कहीं ज्यादा है।

सीएसई की रिपोर्ट के मुताबिक हर दो साल में ऐसे बढ़े गर्म इलाके

2014: उत्तरी दिल्ली का बवाना।

2016: नजफगढ़, रोहिणी, राजौरी गार्डन, नरेला समेत दूसरे इलाके।

2018: संगम विहार, बदरपुर, जैतपुर, पालम, आईजीआई एयरपोर्ट।

2022: जाफरपुर, छतरपुर, मुंगेशपुर, मुंडका, शाहदरा।

2024: लोधी रोड, रिज, पूसा, राजघाट।

इन सभी क्षेत्रों सुबह और शाम का तापमान ज्यादा होता है। बढ़ती गर्मी से दिन व रात और शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों के तापमान में देखा जा सकता है। अगर रात भर तापमान अधिक रहता है तो लोगों को दिन की गर्मी से उबरने का मौका कम मिलता है। इसका सबसे बड़ा कारण जमीन को इस्तेमाल करने का तरीका बदल रहा है। अधिक से अधिक कंक्रीट का जाल बिछाया जा रहा है। इससे सूर्य की किरणों को अधिक फैलाव नहीं मिलता है, जिससे उस क्षेत्र में अधिक गर्मी होती है। यही नहीं, तेजी से जलाशय कम या खत्म हो रहे हैं। ऐसे में गर्म क्षेत्र बढ़ रहे हैं। गर्मी और उमस से लोग पहले से अधिक परेशान हो रहे हैं।

गर्मी और गर्म इलाकों में इसलिए हो रहा इजाफा

सीएसई के मुताबिक सबसे बड़ी वजह निर्माण स्थलों में बढ़ोतरी है। इसके अलावा घनी बसावट, वाहनों की ज्यादा संख्या, आवासीय एवं व्यावसायिक परिसरों की संख्या बढ़ने से तापमान में वृद्धि, प्रदूषक की मात्रा बढ़ने के साथ जमीन के नजदीक ओजोन का स्तर भी बढ़ना है।

शहरों में अर्बन हीट इफेक्ट के प्रबंधन के लिए तत्काल काम करने की जरूरत है। हरित क्षेत्र में बढ़ोतरी, जलाशयों के निर्माण के साथ-साथ भवनों की संरचना में भी ऐसे बदलाव लाए जाने चाहिए जिससे कि वे तापमान के ज्यादा अनुकूल हो सकें। -अविकल सोमवंशी, वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी, अर्बन लैब, सीएसई

प्रोबेशन काल में महिला शिक्षिकाओं को मिलेगा मातृत्व अवकाश , प्रोबेशन के समय जोड़ी जाएगी सर्विस

* डीयू ने प्रोबेशन अवधि में महिला शिक्षिकाओं के मातृत्व अवकाश को लेकर सर्कुलर जारी किया ।
* फोरम ने महिला शिक्षिकाओं के लिए मातृत्व अवकाश दिए जाने का स्वागत किया ।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के डिप्टी रजिस्ट्रार (कॉलेजिज) ने सभी महाविद्यालयों के प्राचार्यो , संस्थानों के निदेशक को एक सर्कुलर जारी कर कहा है कि जो कॉलेज /संस्थान प्रोबेशन अवधि के विस्तार की स्थिति के संबंध में स्पष्टीकरण मांग रहे हैं जिन महिलाओं को उनके प्रोबेशन अवधि के दौरान मातृत्व अवकाश दिया गया है । बता दें कि हाल ही में विभिन्न विभागों / कॉलेजों में स्थायी हुई सहायक प्रोफेसर के पदों पर महिला शिक्षिकाओं द्वारा प्रोबेशन अवधि के दौरान मातृत्व अवकाश लेने को लेकर कॉलेजों व विश्वविद्यालय के बीच पत्राचार चल रहा था जिसे विश्वविद्यालय ने सर्कुलर जारी कर विराम लगा दिया है और कहा है कि मातृत्व अवकाश में प्रोबेशन अवधि पर कोई असर नहीं पड़ेगा , मातृत्व अवकाश के समय प्रोबेशन अवधि के समय को भी सर्विस में जोड़ा जाएगा तथा प्रमोशन के समय वह अवधि जुड़ेगी । फोरम ऑफ एकेडेमिक्स फॉर सोशल जस्टिस ने महिला शिक्षिकाओं को प्रोबेशन अवधि में दिया जा रहा मातृत्व अवकाश पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा है कि विश्वविद्यालय का यह स्वागत योग्य कदम है ।

फोरम के चेयरमैन डॉ. हंसराज सुमन ने बताया है कि विश्वविद्यालय द्वारा जारी कॉलेजों को सर्कुलर में कहा गया है कि दो से कम जीवित बच्चों वाली स्थायी महिला शिक्षिका और गैर -शिक्षण कर्मचारियों को चिकित्सा प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने पर 180 दिनों से अधिक की अवधि के लिए पूर्ण वेतन पर मातृत्व अवकाश दिया जा सकता है । यह भी स्पष्ट किया है कि पूरे कैरियर में दो बार इसका लाभ दिया जाएगा । साथ ही इस संबंध में निर्धारित नियमों के अनुसार छुट्टी खाते से डेबिट नहीं किया जाएगा । उन्होंने बताया है कि विश्वविद्यालय ने सर्कुलर में कहा है कि प्रोबेशन के दौरान मातृत्व अवकाश प्राप्त शिक्षण व गैर शिक्षण कर्मचारियों को पूर्ण वेतन का भुगतान किया जा सकता है इसलिए प्रोबेशन अवधि के विस्तार का सवाल ही नहीं उठता , यदि वह सफलता पूर्वक प्रोबेशन अवधि पूरी कर लेती है ।

डॉ. हंसराज सुमन ने बताया है कि दिल्ली विश्वविद्यालय में एक दशक बाद विभागों / कॉलेजों में लगभग 4600 स्थायी सहायक प्रोफेसर शिक्षकों की नियुक्ति हुई है । इन नियुक्तियों में अधिकतर महिला शिक्षिकाओं की हुई है । स्थायी नियुक्ति के पश्चात कुछ महिला शिक्षिकाओं की ओर से मातृत्व अवकाश के लिए आवेदन किया तो उनकी छुट्टी को प्रोबेशन अवधि में न जोड़े जाने पर दिल्ली विश्वविद्यालय में शिकायत की थी । महिला शिक्षिकाओं की शिकायत को गम्भीरता से लेते हुए उसके उत्तर में डीयू के डिप्टी रजिस्ट्रार (कॉलेजिज) ने कॉलेज प्राचार्यो , संस्थानों , निदेशक को सर्कुलर जारी कर कहा है कि स्थायी महिला शिक्षिकाओं के लिए प्रोबेशन के दौरान मातृत्व अवकाश का समय प्रोबेशन अवधि में जुड़ेगा ।

डॉ. हंसराज सुमन चेयरमैन -- फोरम ऑफ एकेडेमिक्स फॉर सोशल जस्टिस

पर्यावरण पाठशाला - समाज के भीतर आवारा कुत्तों के प्रबंधनः एक विजयी स्थिति के लिए कार्यवाही और रोकथाम

आजकल आवारा कुत्तों की समस्या कई समाजों में एक गंभीर मुद्दा बन चुकी है। यह समस्या न केवल कुत्तों के लिए खतरनाक होती है बल्कि समाज के निवासियों के लिए भी चिंता का कारण बनती है। इस समस्या का समाधान एक संयुक्त और संतुलित दृष्टिकोण से संभव है, जिससे कुत्तों और निवासियों दोनों के हितों का ध्यान रखा जा सके। यहाँ कुछ कदम बताए जा रहे हैं जिनसे इस समस्या का प्रभावी और संवेदनशील प्रबंधन किया जा सकता हैः

1. कुत्तों का टीकाकरण और नसबंदी

आवारा कुत्तों की संख्या नियंत्रित करने के लिए उनका टीकाकरण और नसबंदी (स्टेरिलाइजेशन) एक महत्वपूर्ण कदम है। टीकाकरण से कुत्तों में रैबीज जैसी गंभीर बीमारियों का खतरा कम होता है, जबकि नसबंदी से उनकी संख्या नियंत्रित रहती है। इसके लिए समाज के निवासियों को मिलकर एक पशु चिकित्सक की सेवाएं लेनी चाहिए।

2. खाना और पानी की व्यवस्था

कुत्तों के लिए नियमित खाना और पानी की व्यवस्था करनी चाहिए। यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कुत्ते भूखे न रहें, क्योंकि भूख उन्हें आक्रामक बना सकती है। निवासियों को इस जिम्मेदारी को सामूहिक रूप से निभाना चाहिए ताकि कुत्तों का भोजन और पानी का प्रबंधन सुचारु रूप से हो सके।

3. शिक्षित और जागरूक करना

समाज के निवासियों को कुत्तों के प्रति संवेदनशील और सहिष्णु बनाने के लिए जागरूकता अभियान चलाना चाहिए। इससे लोग कुत्तों के साथ बेहतर तरीके से व्यवहार कर सकेंगे और उन्हें नुकसान पहुंचाने से बचेंगे।

4. आश्रय गृह का निर्माण

समाज में एक छोटे से आश्रय गृह का निर्माण किया जा सकता है जहाँ कुत्तों को आराम और सुरक्षा मिल सके। इसके लिए समाज के लोग मिलकर धन एकत्रित कर सकते हैं और एक सुरक्षित स्थान का निर्माण कर सकते हैं।

5. सरकारी सहायता और एनजीओ से सहयोग

समाज के निवासियों को स्थानीय सरकारी निकायों और एनजीओ से सहयोग लेना चाहिए। ये संस्थाएं कुत्तों के टीकाकरण, नसबंदी और पुनर्वास के लिए आवश्यक संसाधन और सहायता प्रदान कर सकती हैं।

6. रिपोर्टिंग सिस्टम स्थापित करना

समाज में किसी भी प्रकार की कुत्तों से संबंधित समस्या की रिपोर्टिंग के लिए एक प्रणाली विकसित करनी चाहिए। इससे तुरंत कार्रवाई की जा सकेगी और समस्याओं का समाधान समय पर हो सकेगा।

समाज में आवारा कुत्तों की समस्या का समाधान एक संतुलित और संवेदनशील दृष्टिकोण से ही संभव है। टीकाकरण, नसबंदी, भोजन और पानी की व्यवस्था, जागरूकता, आश्रय गृह और सरकारी सहयोग से कुत्तों और निवासियों के बीच एक संतुलन स्थापित किया जा सकता है। यह एक विजयी स्थिति है, जिसमें कुत्तों का जीवन सुरक्षित और समाज का वातावरण शांतिपूर्ण बना रहता है।

इस प्रकार के सामूहिक और संगठित प्रयास से न केवल कुत्तों की समस्या का समाधान होगा बल्कि समाज में एक सहानुभूतिपूर्ण वातावरण भी बनेगा, जिससे सभी को लाभ होगा।

indiangreenbuddy@gmail.com

पानी की समस्या पर डीयू और डूसू करेंगे मिलकर काम, कुलपति को सौंपा ज्ञापन

मई माह में ही दिल्ली में जल संकट गहराने लगा है। राष्ट्रीय राजधानी के कई इलाकों में लोगों को पानी की दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। इसके तहत अब दिल्ली विश्वविद्यालय और दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ परिसर के भीतर पानी की समस्या को साथ मिलकर दूर करेंगे। इसके लिए आज डूसू प्रतिनिधियों ने एक बैठक की।

नई दिल्ली। *दिल्ली विश्वविद्यालय और दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ (डूसू) अब परिसर में पानी की समस्या पर मिलकर काम करेंगे। यह निर्णय दिल्ली विश्वविद्यालय के अधिकारियों के साथ डूसू प्रतिनिधियों की बैठक में लिया गया। डीयू पदाधिकारियों ने पानी की समस्या पर ज्ञापन सौंपा।*

विश्वविद्यालय में 25 वाटर कूलर लगाने के निर्देश भी जारी : *इस पर कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने विश्वविद्यालय में 25 वाटर कूलर लगाने के निर्देश भी जारी किए। गुरुवार को डूसू सचिव अपराजिता के नेतृत्व में विद्यार्थियों के एक प्रतिनिधिमंडल ने डीयू के कुलपति प्रो. योगेश सिंह से मुलाकात की।*

विश्वविद्यालय से संबंधित मांगों को लेकर कुलपति को सौंपा ज्ञापन : *विश्वविद्यालय परिसर से संबंधित मांगों को लेकर ज्ञापन कुलपति को सौंपा। डूसू की ओर से डीयू के उत्तरी परिसर के कला संकाय, केंद्रीय पुस्तकालय एवं छात्रावासों में स्वच्छ एवं शीतल पेयजल और अन्य आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने की मांग की गई।*

कक्षा 11वीं के स्कूल दाखिले की प्रक्रिया.....

दिल्ली सरकार के सर्वोदय विद्यालयों में ऑनलाइन एडमिशन चालू हो गए है कक्षा - 11वी दाख़िले के बारे में दिशा निर्देश-
(प्रवेश फॉर्म भरने की प्रक्रिया तीन चरणो में रहेगी)

पहला चरण :-
- x रजिस्ट्रेशन :- 22-05-2024 से 07-06-2024 तक होगा
- x स्कूल लिस्ट जारी होने की तिथि :- 18-062024
- x डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन :- 19-06-2024 से 29-06-2024 तक होगा

दूसरा चरण :-
- x रजिस्ट्रेशन :- 01-07-2024 से 10-07-2024 तक होगा
- x स्कूल लिस्ट जारी होने की तिथि :- 22-07-2024
- x डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन :- 23-07-2024 से 31-07-2024 तक होगा

तीसरा चरण :-
- x रजिस्ट्रेशन :- 01-08-2024 से 10-08-2024 तक होगा
- x स्कूल लिस्ट जारी होने की तिथि :- 20-08-2024
- x डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन :- 21-08-2024 से 31-08-2024 तक होगा

ग्याहर्वी कक्षा की एडमिशन प्रक्रिया ऑनलाइन रहेगी, शिक्षा विभाग की वेबसाइट edudel .nic .in पर दिए गए समय के अनुसार फॉर्म भरे जायेंगे।

संस्कारशाला - मैं कितना खुश हूँ? - अंकुर

आज के समय में, जब हर कोई किसी न किसी चीज़ में व्यस्त है, यह जानना और समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि हम असल में कितने खुश हैं। हम अक्सर अपने दिनचर्या में इतने उलझ जाते हैं कि अपनी भावनाओं पर ध्यान देना भूल जाते हैं। तो आइए, खुद से यह सवाल पूछें: "मैं कितना खुश हूँ?"

आत्ममंथन का महत्व

जब हम खुद से यह सवाल पूछते हैं, तो यह हमें आत्ममंथन की ओर ले जाता है। आत्ममंथन का मतलब है अपने अंदर झांकना और अपनी भावनाओं को समझना। इससे हमें यह पता चलता है कि हमारे जीवन में क्या सही है और क्या गलत। यह जानना आवश्यक है कि हम असल में किस चीज़ से खुश होते हैं और किससे नहीं।

खुशी के स्रोत

खुशी के कई स्रोत हो सकते हैं, जैसेः

परिवार और दोस्तः हमारे जीवन में परिवार और दोस्तों का महत्व बहुत बड़ा होता है। उनके साथ बिताया समय हमें सच्ची खुशी देता है।

स्वास्थ्यः शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य भी हमारी खुशी का एक बड़ा स्रोत है। अगर हम स्वस्थ हैं, तो हम खुश रहते हैं।

शौकः अपने शौक को पूरा करना, चाहे वह पढ़ना हो, लिखना हो, गाना हो या फिर कोई और गतिविधि, हमें आत्मसंतोष और खुशी देता है।

प्रकृतिः प्रकृति के साथ समय बिताना, जैसे पहाड़ों पर चढ़ना या समुद्र के किनारे बैठना, हमें आंतरिक शांति और खुशी देता है। सुबह या शाम के समय में पार्क या बगीचे में टहलना न केवल शरीर को स्वस्थ रखता है, बल्कि मन को भी शांत करता है। पेड़ों की छांव, फूलों की खुशबू और पक्षियों की चहचहाहट से मन को एक नई ताजगी मिलती है।

खुशी कैसे पाएं?

ध्यान और योगः ध्यान और योग करने से मानसिक शांति मिलती है और हम अपने अंदर की खुशी को महसूस कर सकते हैं।

सकारात्मक सोचः सकारात्मक सोच रखने से हम जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होते हैं और खुश रहते हैं।

आभार व्यक्त करनाः जो हमारे पास है, उसके लिए आभार व्यक्त करना भी हमें खुशी देता है। जब हम छोटी-छोटी चीज़ों में खुशी ढूंढते हैं, तो हमारा जीवन और भी खुशहाल हो जाता है।

स्वयं के लिए समय निकालनाः खुद के लिए समय निकालना और अपनी भावनाओं को समझना बहुत जरूरी है। इससे हमें पता चलता है कि हमें किस चीज़ से खुशी मिलती है।

अपने आप से यह सवाल पूछना, "मैं कितना खुश हूँ?" हमें आत्ममंथन की ओर ले जाता है और हमें यह समझने में मदद करता है कि हमारी असली खुशी क्या है। खुशी बाहरी चीजों में नहीं, बल्कि हमारे अंदर है। इसे पहचानें और अपनी जीवन यात्रा को खुशहाल बनाएं। जब आप अपनी खुशी को प्राथमिकता देंगे, तो आपका जीवन वास्तव में सुखमय और संतुष्टिपूर्ण होगा।

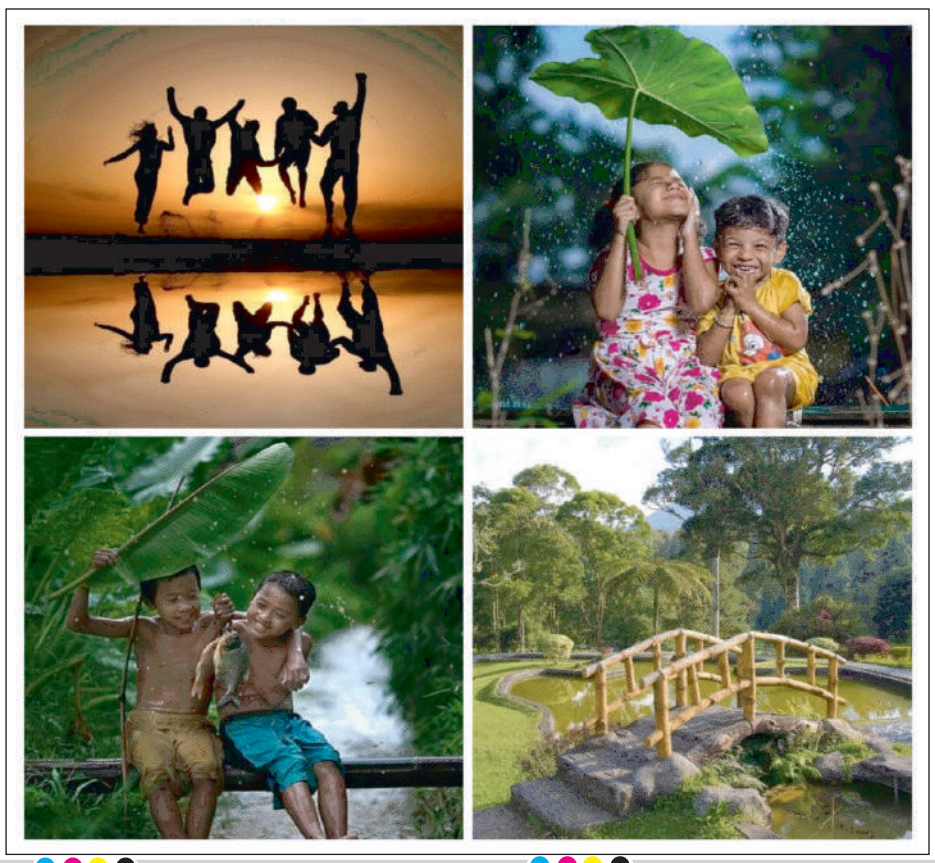

भीषण गर्मी ने किया बुरा हाल, दिन ही नहीं अब रात भी बेहाल; लू से करें ऐसे बचाव

गुरुग्राम जिले में मौसम लगातार करवट ले रहा है। भीषण गर्मी के कारण दिन ही नहीं अब रात को भी लोगों को चैन नहीं मिल पा रहा है। तीन साल में सबसे ज्यादा गर्म बुधवार की रात रही। यहां का न्यूनतम तापमान 33.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। ऐसे में लोगों को खुद को लू से बचा कर रखा चाहिए।

परिवहन विशेष न्यूज

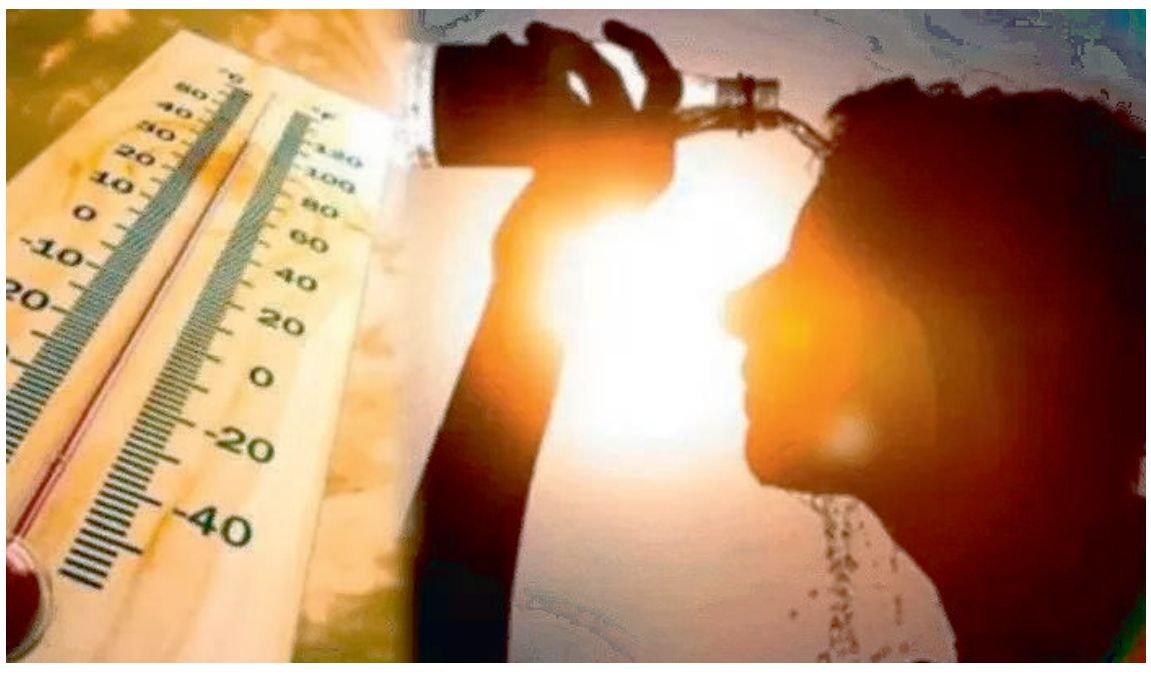

गुरुग्राम। क्षेत्र में भीषण गर्मी पड़ रही है। दिन तवे जैसे गर्म हैं तो रात को भी लू के थपेड़े लग रहे हैं। बुधवार की रात पिछले तीन साल में सबसे ज्यादा गर्म रिकार्ड की गई। न्यूनतम तापमान 33.4 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया। दिन का पारा भी 46.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

सुबह से शाम तक लू और गर्मी से लोग बेहाल हो गए। धूप के कारण बाहर निकलने में परेशानी है और लोग घरों में ही रहने को मजबूर हो गए हैं। दोपहर में सड़कें सूनसान होने लगी हैं और बाजारों में भी लोग कम पहुंच रहे हैं। सुबह दस बजे तक और शाम को छह बजे के बाद ही लोग बाजारों से खरीदारी कर रहे हैं।

बता दें कि इससे पहले बुधवार को अधिकतम तापमान 46.2 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 30.5 डिग्री सेल्सियस रहा था। मौसम विभाग ने हीट वेव चलने का अलर्ट जारी किया था। पिछले लगभग 15 दिन से क्षेत्र प्रचंड गर्मी की चपेट में है। लू चलने और गर्मी से जनजीवन प्रभावित हो रहा है। मौसम विभाग (IMD News) के अनुसार एक या दो जून को क्षेत्र में मौसम बदलने का अनुमान है। कहीं-कहीं बूंदाबांदी हो सकती है।

16 मई 2022 को 33.2 डिग्री था रात का तापमान

16 मई 2022 को अधिकतम तापमान 47.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। इसके साथ ही न्यूनतम तापमान यानी रात का पारा 33.2 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस दिन के बाद अब रात का तापमान इतना ऊपर पहुंचा है।

लू से ऐसे करें बचाव

गर्मी में लू (summer heat) और गर्मी से बचाव करने के लिए दिन में बार-बार पानी पीते रहें।

नारियल पानी और जूस या लस्सी पीएं।

धूप में बाहर जान से बचें।

धूप में छाता लेकर, सिर पर कैप लगाकर या सूती कपड़ा बांधकर जाएं।

लू लगने के लक्षण दिखाई देने पर तुरंत चिकित्सक से सलाह लें।

दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेस-वे पर दो कारों की भीषण टक्कर, एक बच्ची की मौत; हादसे में सात घायल

गाजियाबाद से दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। यहां पर एक कार की दूसरे कार से भीषण टक्कर हो गई। जिसमें गाड़ी में सवार एक बच्ची की मौत हो गई। जबकि इस हादसे में सात लोग घायल हो गए। सूचना के बाद पहुंची पुलिस की टीम ने घायलों को नजदीक के अस्पताल में भर्ती कराया। दुर्घटना के बाद से आरोपी कार चालक फरार है।

गाजियाबाद। दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेस वे पर मेरठ से दिल्ली वाली लेन पर नाहल गांव के पास तेज रफ्तार वरना कार ने दूसरी इको कार को टक्कर मार दी। टक्कर लगने से इको कार एक्सप्रेस-वे (Ghaziabad Accident) से नीचे गिर गई। हादसे में एक बच्ची की मौत हो गई। जबकि दुर्घटना में 7 लोग घायल हुए हैं।

पुलिस ने घायलों को अस्पताल में कराया भर्ती

सूचना पर पहुंची पुलिस ने इको कार सवार घायलों को डासना सीएचसी में इलाज के लिए भेजा है। पुलिस (Ghaziabad Police) का कहना है कि वरना कार चालक मौके पर कार छोड़कर फरार हो गया।

कार में दो महिला, दो पुरुष और चार बच्चे थे सवार

इको कार में दो महिला, दो पुरुष और चार बच्चे सवार थे। वैन में राजकोट का परिवार हरिद्वार में अस्थियां विसर्जित कर वापस राजकोट जा रहा था।

सावधान! गाजियाबाद में दिखा कुत्तों का आतंक, 24 घंटे में 48 बच्चों समेत 253 लोगों को काटा

गाजियाबाद (Ghaziabad News) में आवारा कुत्तों के आतंक की वजह से बीते 24 घंटे में में 48 बच्चों समेत 253 लोगों को कुत्तों ने काटा है। हैरानी तो तब हुई जब 39 लोगों को पालतू कुत्तों ने काटा। जिन पर डॉग्स ने अटैक किया उनमें 42 पुरुष 23 महिला 18 बच्चे और एक बुजुर्ग भी शामिल हैं। पीड़ित एंटी रेबीज वैक्सीन लगवाने के लिए अस्पताल पहुंच रहे हैं।

गाजियाबाद। आवारा और पालतू कुत्तों के काटने पर अब एंटी रेबीज वैक्सीन लगवाने वालों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। स्वास्थ्य विभाग की रिपोर्ट के अनुसार पिछले 24 घंटे में 48 बच्चों समेत 253 लोगों को कुत्तों ने काटा। इनमें 39 लोगों को पालतू कुत्तों ने काटा है।

शहरी क्षेत्र में 135 और ग्रामीण क्षेत्र में 118 लोगों को कुत्तों ने काटा है। जिला एमएमजी अस्पताल में कुत्तों के काटने पर एंटी रेबीज वैक्सीन लगवाने 84 लोग पहुंचे। सीएमएस डा. राकेश कुमार सिंह ने बताया कि इनमें 42 पुरुष, 23 महिला, 18 बच्चे और एक बुजुर्ग शामिल हैं।

इसके अलावा 72 लोगों ने एआरवी की दूसरी और पांच लोगों ने तीसरी डोज लगवाई है। उन्होंने बताया कि इमरजेंसी में 11 लोगों ने एंटी रेबीज वैक्सीन लगवाई है। संजयनगर स्थित जिला संयुक्त अस्पताल में 13 लोगों को एंटी रेबीज वैक्सीन के साथ टिटनेस का टीका लगाया गया है।

अस्पताल में कुल 51 लोगों ने एंटी रेबीज वैक्सीन की पहली और 66 लोगों ने दूसरी डोज लगवाई है। जिले में कुल 281 लोगों ने एआरवी की दूसरी व तीसरी डोज लगवाई है। गली-मौहल्लों के अलावा सोसायटियों में आवारा कुत्तों की समस्या बड़ी होती जा रही है।

कुछ लोगों जहां कुत्तों के लिए फीडिंग जोन बना रहे हैं वहीं पर कुछ लोग कुत्तों पर लाठी डंडे बरसा रहे हैं। नगर निगम स्तर से कुत्तों का पंजीकरण कराया जा रहा है और बंध्याकरण अभियान जारी है। ग्रामीण क्षेत्रों में इस संबंध में कार्रवाई नहीं हो रही है।

बुधवार को गाजियाबाद में कहां कितने लोगों ने लगवाई एआरवी

अस्पताल	नये पुराने
जिला एमएमजी अस्पताल	84 77
संयुक्त अस्पताल	51 66
सीएचसी डासना	16 21
सीएचसी मुरादनगर	22 25
सीएचसी मोदीनगर	20 23
सीएचसी लोनी	23 28
सीएचसी भोजपुर	13 15
संयुक्त अस्पताल लोनी	24 26

अग्निकांड़ों ने हर भारतीय का दिल जख्मी किया

ललित गर्ग

आग क्यों और कैसे लगी, यह तो जांच का विषय है ही लेकिन इन व्यावसायिक इकाइयों को उसके मालिकों ने मौत का कुआं बना रखा था। आखिर क्या वजह है कि जहां दुर्घटनाओं की ज्यादा संभावनाएं होती हैं, वही सारी व्यवस्थाएं फेल दिखाई देती है? सारे कानून कायदों का वहीं पर स्याह हनन होता है।

गुजरात के राजकोट में एक एम्यूजमेंट पार्क के अंदर गेमिंग जोन में लगी आग की लपटें अभी ठीक से बुझी भी नहीं थीं कि शनिवार देर रात राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में बच्चों के एक प्राइवेट हॉस्पिटल में आग लगने से सात नवजात बच्चों की जान चली गयी। दोनों ही घटनाओं में हताहत होने वालों में ज्यादातर छोटे बच्चे हैं। निश्चित रूप से ये हादसे प्रशासनिक लापरवाही की उपज हैं, यही कारण है कि सिस्टम में खामियों और ऐसी आपदाओं को रोकने में सरकारी अधिकारियों की लापरवाही की निंदा की जा रही है। यह याद रखने योग्य है कि नियमित अंतराल पर मानवीय जिम्मेदारी वाले पहलू की अनदेखी से ऐसी गंभीर घटनाएं होने के बावजूद अधिकारियों की उदासीनता और लापरवाही कम होती नहीं दिख रही है। इन जहरीली काली आग ने कितने ही परिवारों के घर के चिराग बुझा दिए। कितनी ही आंखों की रोशनी छीन ली और एक कालिख पोत दी कानून और व्यवस्था के कर्णधारों के मुँह पर। 'अग्निकांड' एक ऐसा शब्द है जिसे पढ़ते ही कुछ दृश्य आंखों के सामने आ जाते हैं, जो भयावह होते हैं, त्रासद होते हैं, डरावने होते हैं। जीवन का हर पल दुर्घटनाओं का शिकार हो रहा है। दुर्घटनाओं को लेकर आम आदमी में संवेदनहीनता की काली छाया का पसरना हो या सरकार की आंखों पर काली पट्टी का बंधना-हर स्थिति में मनुष्य जीवन के अस्तित्व एवं अस्मिता पर सन्नाटा पसर रहा है।

इन दोनों मामलों में शुरुआती सूचनाएं ही संदेह का पुख्ता आधार प्रदान कर रही हैं। मसलन, यह बताया गया कि राजकोट के प्राइवेट एम्यूजमेंट पार्क में चल रहे गेमिंग जोन को फायर एनओसी नहीं मिला था। इसके बावजूद यह गेमिंग जोन धड़ल्ले से चल रहा था, बड़ी संख्या में बच्चे यहां महंगे टिकट लेकर आ रहे थे और अगर आग लगने की यह घटना न होती तो पता नहीं कब तक सब कुछ ऐसे ही चलता रहता। ठीक इसी तरह दिल्ली के बेबी केयर सेंटर की आग की घटना ने सभी को झकझोर कर रख दिया है। एनआईसीयू में वेंटिलेटर पर ही 7 नवजात ने दम तोड़ दिया। आग की लपटें इतनी तेज थी कि बच्चों को पीछे के रास्ते से बड़ी मुश्किल से निकाला गया। 5 बेड की क्षमता वाले हॉस्पिटल में 12 बच्चों का इलाज हो रहा था। जाहिर है, एक बेड पर दो या तीन बच्चे थे। आग लगने, हॉस्पिटल के मिस मैनेजमेंट और लापरवाही का क्या स्थानीय प्रशासन को अंदाजा नहीं होना चाहिए कि उसके कार्यक्षेत्र में किस तरह के व्यवसाय कानूनी प्रक्रियाओं की अनदेखी करते हुए चलाए जा रहे हैं? प्रश्न है कि इन बढ़ती दुर्घटनाओं की नृशंस चुनौतियों का क्या अंत है? बहुत कठिन है दुर्घटनाओं की उफनती नदी में जीवनरूपी नौका को सही दिशा में ले चलना और मुकाम तक पहुंचाना, यह चुनौती सरकार के सम्मुख तो है ही, आम जनता भी इससे बच नहीं सकती। इन दोनों अग्निकांड़ों में पीड़तिजन तो सहानुभूति के पात्र हैं ही, पर इन घटनाओं के लिए सहानुभूति की पात्र देश की जनता भी है, जो भ्रष्ट, लापरवाह एवं लालची प्रशासनिक चरित्रों को झेल रही है। मनुष्य अपने स्वार्थ और रुपए के लिए इस सीमा तक बेईमान और बदमाश हो जाता है कि हजारों के जीवन और सुरक्षा से खेलता है। दो-चार परिवारों की सुख समृद्धि के लिए अनेक घर-परिवार उजाड़ देता है।

राजकोट हो या राजधानी में प्राइवेट संस्थानों में आग लगना- बेकसूर लोगों के मारे जाने की घटनाएं कोई नई या चौंकाने वाली बात नहीं है। कभी कोई फैक्ट्री इस वजह से सुर्खियों में आती है तो कभी कोचिंग संस्थान। कभी कोई अस्पताल तो कभी एम्यूजमेंट पार्क। घटना के बाद पता चलता है कि वे संस्थान तमाम कानूनी प्रक्रियाओं को ताक पर रखते हुए चलाए जा रहे थे। यही वजह है कि दोनों ही मामलों में तत्काल जांच के आदेश दे दिए गए। मगर आम तौर पर ऐसे आदेश घटना से उपजे असुविधाजनक एवं ज्वलंत सवालों की ओर से लोगों का ध्यान हटाने भर का काम करते हैं। आसमान से बरसती आग के बीच शनिवार को हुए इन दोनों अग्निकांडों में मासूमों व बच्चों की मौत ने हर संवेदनशील व्यक्ति को झकझोरा है। तंत्र की काहिली और आपराधिक लापरवाही के चलत ऐसे हादसे होते हैं जिनमें भ्रष्टाचार पसरा होता है, जब अफसरशाह लापरवाही करते हैं, जब स्वार्थ एवं धनलोलुपता में मूल्य बौने हो जाते हैं और नियमों और कायदे-कानूनों का उल्लंघन होता है।

आग क्यों और कैसे लगी, यह तो जांच का विषय है ही लेकिन इन व्यावसायिक इकाइयों को उसके मालिकों ने मौत का कुआं बना रखा था। आखिर क्या वजह है कि जहां दुर्घटनाओं की ज्यादा संभावनाएं होती हैं, वही सारी व्यवस्थाएं फेल दिखाई देती है? सारे कानून कायदों का वहीं पर स्याह हनन होता है। हर दुर्घटना में गलती भ्रष्ट आदमी यानी अधिकारी एवं व्यवसायी की ही होती है पर कारण बना दिया जाता हैं पुर्जों व उपकरणों की खराबी को। जैसे-जैसे जीवन तेज होता जा रहा है, सुरक्षा उतनी ही कम हो रही है, जैसे-जैसे प्रशासनिक सर्तकता की बात सुनाई देती है, वैसे-वैसे प्रशासनिक कोताही के सबूत सामने आते हैं, मरने वालों की संख्या बढ़ रही है, लेकिन हर बड़ी दुर्घटना कुछ शोर-शराबें के बाद एक और नई दुर्घटना की बाट जोहने लगती है। सरकार और सरकारी विभाग जितनी तत्परता मुआवजा देने में और जांच समिति बनाने में दिखाते हैं, अगर सुरक्षा प्रबंधों में इतनी तत्परता दिखाएं तो दुर्घटनाओं की संख्या घट सकती है। लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है, क्यों नहीं हो रहा है, यह मंथन का विषय है।

राजधानी दिल्ली ही नहीं, देश में हर जगह कानूनों एवं व्यवस्थाओं की धज्जियां उड़ते हुए देखा जा सकता है। इंसान का जीवन कितना सस्ता हो गया है। अपने धन लाभ के लिये कितने इंसानों के जीवन को दांव पर लगा देता है। मालिकों से ज्यादा दोषी ये अधिकारी और कर्मचारी हैं। अगर ये अपनी जिम्मेदारी को पूरी ईमानदारी से निभाते तो उपहार सिनेमा अग्निकांड नहीं होता, नन्दनगरी के समुदाय भवन की आग नहीं लगती, पीरागढ़ी उद्योगनगर की आग भी उनकी लापरवाही का ही नतीजा थी। बात चाहे पब की हो या रेल की, प्रदूषण की हो या खाद्य पदार्थों में मिलावट की-हमें हादसों की स्थितियों पर नियंत्रण के ठोस उपाय करने ही होंगे। तेजी से बढ़ता हादसों का हिंसक एवं डरावना दौर किसी एक प्रान्त या व्यक्ति का दर्द नहीं रहा। इसने हर भारतीय दिल को जख्मी किया है। इंसानों के जीवन पर मंडरा रहे मौत के तरह-तरह की डरावने हादसों एवं दुर्घटनाओं पर काबू पाने के लिये प्रतीक्षा नहीं, प्रक्रिया आवश्यक है। स्थानीय निकाय हो या सरकारें, लाइसेंसिंग विभाग हो या कानून के रखवाले-अगर मनुष्य जीवन की रक्षा नहीं की जा सकती तो फिर इन विभागों का फायदा ही क्या? कौन नहीं जानता कि ये विभाग कैसे काम करते हैं। सब जानते हैं कि प्रदूषण नियंत्रण के नाम पर इंस्पैक्टर आते हैं और बंधी-बंधाई राशि लेकर लौट जाते हैं। लाइसेंसिंग विभाग में ऊपर से नीचे तक भ्रष्टाचार है। नैतिकता और मर्यादाओं के इस टूटते बांध को, लाखों लोगों के जीवन से खिलवाड़ करते इन आदमखोरों से कौन मुकाबला करेगा? कानून के हाथ लम्बे होते हैं पर उसकी प्रक्रिया भी लम्बी होती है। कानून में अनेक छिद्र हैं। सब बच जाते हैं। सजा पाते हैं गरीब आश्रित, निर्दोष अभिभावक जो मरने वालों के पीछे जीते जी मर जाते हैं। पुलिस "व्यक्ति" की सुरक्षा में तैनात रहती है "जनता" की सुरक्षा में नहीं। भ्रष्ट अधिकारी नोट जुगाड़ने की कोशिश में रहते हैं, जनता की सुरक्षा के लिये नहीं। भ्रष्टाचार शासन एवं प्रशासन की जड़ों में पेठा हुआ है, इन विकट एवं विकराल स्थितियों में एक ही पंक्ति का स्मरण बार बार होता है, "घर-घर में है रावण बैठा इतने राम कहां से लांऊ"। भ्रष्टाचार, बेईमानी और अफसरशाही इतना हावी हो गया है कि सांस लेना भी दूभर हो गया है।

राजकोट हो या राजधानी में प्राइवेट संस्थानों में आग लगना- बेकसूर लोगों के मारे जाने की घटनाएं कोई नई या चौंकाने वाली बात नहीं है। कभी कोई फैक्ट्री इस वजह से सुर्खियों में आती है तो कभी कोचिंग संस्थान। कभी कोई अस्पताल तो कभी एम्यूजमेंट पार्क। घटना के बाद पता चलता है कि वे संस्थान तमाम कानूनी प्रक्रियाओं को ताक पर रखते हुए चलाए जा रहे थे। यही वजह है कि दोनों ही मामलों में तत्काल जांच के आदेश दे दिए गए। मगर आम तौर पर ऐसे आदेश घटना से उपजे असुविधाजनक एवं ज्वलंत सवालों की ओर से लोगों का ध्यान हटाने भर का काम करते हैं। आसमान से बरसती आग के बीच शनिवार को हुए इन दोनों अग्निकांडों में मासूमों व बच्चों की मौत ने हर संवेदनशील व्यक्ति को झकझोरा है।

स्कोडा की मिड साइज सेडान स्लाविया जल्द हो सकती है अपडेट, फेसलिफ्ट वर्जन को टेस्टिंग के दौरान किया गया स्पॉट

परिवहन विशेष न्यूज

यूरोपियन वाहन निर्माता Skoda की ओर से भारतीय बाजार में दमदार इंजन और बेहतरीन फीचर्स के साथ कार और एसयूवी सेगमेंट में कई वाहन ऑफर किए जाते हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी जल्द ही अपनी मिड साइज सेडान Slavia को अपडेट कर सकती है। फेसलिफ्ट में कंपनी की ओर से किस तरह के बदलाव किए जा सकते हैं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। स्कोडा की ओर से भारत में मिड साइज सेडान कार के तौर पर Slavia को ऑफर किया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी की ओर से जल्द ही इसे अपडेट किया जा सकता है। कंपनी की ओर से इसके फेसलिफ्ट वर्जन में किस तरह के बदलावों को किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Skoda Slavia का आएगा Facelift वर्जन

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी की ओर से जल्द ही Slavia को अपडेट किया जा सकता है। हाल में ही इस कार के फेसलिफ्ट वर्जन को पहली बार भारत में टेस्टिंग के दौरान स्पॉट किया गया है। जिसके बाद इसको अपडेट किए जाने की खबर सामने आई है। हालांकि कंपनी की ओर से इस बारे में अभी कोई जानकारी नहीं दी गई है।

क्या होंगे बदलाव

रिपोर्ट्स के मुताबिक टेस्टिंग के दौरान Slavia की जिस यूनिट को देखा गया है, वह पूरी तरह से कैमोफ्लाज से ढकी हुई थी। ऐसे में कार की सिर्फ रियर लाइट्स की झलक मिल रही थी। जो मौजूदा वर्जन की तरह ही दिखाई दे रही थीं। उम्मीद की जा रही है कि फेसलिफ्ट वर्जन में इसके बंपर, ग्रिल और हेडलाइट्स में हल्के बदलाव किए जाएंगे। इसके अलावा इसके साइड प्रोफाइल में किसी भी तरह के ज्यादा बदलाव नहीं होंगे। फेसलिफ्ट वर्जन में कंपनी कुछ नए फीचर्स को भी दे सकती है। जिनमें पैनोरमिक रूफ, रियर डिस्क ब्रेक, 360 डिग्री कैमरा और ADAS जैसे फीचर्स शामिल हैं।

इंजन में नहीं होगा बदलाव

रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी की ओर से स्लाविया के फेसलिफ्ट वर्जन के इंजन में किसी भी तरह का बदलाव नहीं किया जाएगा। इसमें मौजूदा वर्जन की तरह ही एक लीटर और तीन सिलेंडर का टर्बो पेट्रोल, 1.5 लीटर ईवो टर्बो पेट्रोल इंजन देगी। इसके साथ कार में 6स्पीड मैनुअल, 7स्पीड डीसीटी ट्रांसमिशन को दिया जा सकता है।

कब होगी लॉन्च

कंपनी की ओर से इस कार को लेकर किसी भी तरह की जानकारी को नहीं दिया गया है। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि इसके फेसलिफ्ट वर्जन को फेस्टिव सीजन के दौरान पेश किया जा सकता है। फिलहाल इस कार की एक्स शोरूम कीमत 11.64 लाख रुपये से शुरू होती है और अगर फेसलिफ्ट वर्जन को लाया जाता है इसकी कीमत में मामूली बढ़ोतरी की जा सकती है।

दमदार इंजन वाली सुपरबाइक चलाते नजर आए बॉलीवुड स्टार जॉन अब्राहम, कीमत इतनी कि आ जाएं आठ आल्टो K10

परिवहन विशेष न्यूज

बॉलीवुड स्टार John Abraham को तेज चलने वाली Superbikes का काफी ज्यादा शौक है। रिपोर्ट्स के मुताबिक John को हाल में ही दमदार इंजन वाली बाइक के साथ देखा गया है। इस बाइक की कीमत इतनी ज्यादा है कि उतने में एक दो नहीं बल्कि आठ Maruti Alto K10 को खरीदा जा सकता है। यह बाइक कौन सी है और इसकी क्या खासियत है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। बॉलीवुड स्टार John Abraham को हाल में ही नई बाइक की सवारी करते हुए देखा गया है। जिसके बाद यह कयास लगाए जा रहे हैं कि बॉलीवुड स्टार ने अपनी बाइक कलेक्शन में एक और दमदार बाइक को शामिल कर लिया है। जिस बाइक को जॉन अब्राहम को चलाते हुए देखा गया है, उसमें कितना ताकतवर इंजन दिया गया है। बाइक की टॉप स्पीड क्या होगी। इसे किस कीमत पर खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

किस बाइक पर आए नजर

जॉन अब्राहम को हाल में नई सुपरबाइक की सवारी करते हुए देखा गया है। जिस बाइक को जॉन को चलाते हुए देखा गया है, वह इटालियन कंपनी Aprilia की सुपरबाइक RSV4 1100 फैक्ट्री अल्ट्रा डार्क है। इस बाइक को कुछ समय पहले ही भारतीय बाजार में लॉन्च किया गया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक जॉन ने इस बाइक को कुछ समय पहले ही खरीदकर अपने कलेक्शन में शामिल किया है।

कितना दमदार इंजन

अप्रीलिया की RSV4 1100 फैक्ट्री अल्ट्रा डार्क बाइक में कंपनी की ओर से 1099 सीसी का वी4 इंजन दिया जाता है। जिससे इसे 217 हॉर्स पावर और 125 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। यह इतनी तेज बाइक है कि इसकी टॉप स्पीड 305 किलोमीटर प्रति घंटा तक है।

कैसे हैं फीचर्स

अप्रीलिया की आरएसवी4 1100 फैक्ट्री अल्ट्रा डार्क बाइक में कई बेहतरीन फीचर्स को दिया जाता है। इसमें कंपनी की ओर से ड्यूल बीम एल्यूमिनियम फ्रेम को दिया जाता है। जिसके साथ कॉर्नरिंग एबीएस, स्पीड लिमिटर, व्हीली कंट्रोल, ट्रैक्शन कंट्रोल, क्रूज कंट्रोल, लॉन्च कंट्रोल, डिजिटल पांच इंच टीएफटी स्क्रीन जैसे फीचर्स शामिल हैं।

डिलीवरी में कितना समय

कंपनी की वेबसाइट पर दी गई जानकारी के मुताबिक अगर कोई ग्राहक इस बाइक को बुक करवाता है तो उसे डिलीवरी के लिए कम से कम 90 से 120 दिनों तक का इंतजार करना पड़ सकता है। कंपनी इस दमदार बाइक को देश के सिर्फ 10 शहरों में ही उपलब्ध करवाती है। जिसमें दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरू, जयपुर, हैदराबाद, चंडीगढ़, सूरत, चेन्नई, पुणे और विशाखापट्टनम शामिल हैं।

कितनी है कीमत

कंपनी की ओर से इस बाइक को 31.26 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर ऑफर किया जाता है। बाजार में इसका सीधा मुकाबला BMW M1000 RR और Duacti Panigale जैसी बेहतरीन बाइक्स के साथ होता है।

देश की पहली सीएनजी बाइक को मिल सकता है फाइटर नाम, बजात ने करवाया ट्रेडमार्क

देश की प्रमुख वाहन निर्माता Bajaj की ओर से कई बेहतरीन बाइक्स को बाजार में ऑफर किया जाता है। लेकिन कंपनी जल्द ही पहली CNG Bike को पेश करने की तैयारी कर रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी ने नया नाम ट्रेडमार्क करवाया है। ऐसे में उम्मीद की जा रही रही है कि इस बाइक को यह नाम दिया जा सकता है।

नई दिल्ली। देश की बड़ी दो पहिया वाहन निर्माता Bajaj Auto की ओर से जल्द ही पहली CNG Bike को पेश किया जा सकता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी ने इस बाइक के लॉन्च से पहले नए नाम को ट्रेडमार्क करवाया है। जिसे CNG Bike में उपयोग किया जा सकता है। रिपोर्ट्स के हवाले से और क्या जानकारी मिली है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Bajaj ने नाम कराया Trademark

बजाज ऑटो ने एक नए नाम को ट्रेडमार्क के लिए दायर किया गया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी ने Fighter नाम को ट्रेडमार्क के लिए दाायर किया है। माना जा रहा है कि कंपनी इस नाम से CNG Bike को ला सकती है।

पिछले महीने करवाया था Bruzer नाम ट्रेडमार्क

इससे पहले कंपनी की ओर से बीते महीने में एक और नाम को ट्रेडमार्क करवाया गया था। कंपनी ने बीते महीने बूजर नाम को भी ट्रेडमार्क करवाया है। ऐसे में उम्मीद है कि कंपनी की ओर से भविष्य में दूसरी सीएनजी बाइक्स में इसका उपयोग किया जा सकता है।

टेस्टिंग के दौरान हुई स्पॉट

बजाज ऑटो की ओर से जल्द ही सीएनजी बाइक को लॉन्च किया जाएगा। कंपनी की ओर से इस बाइक को 18 जून को बाजार में लाया जा सकता है। लेकिन इसके पहले CNG Bike को कई बार टेसटिंग के दौरान देखा गया है। जहां इसके कुछ फीचर्स की जानकारी भी मिल रही है।

कैसे होंगे फीचर्स

देश की पहली CNG Bike में सर्कुलर एलईडी हेडलाइट, छोटे साइड व्यू मिरर, कवर्ड सीएनजी टैंक, लंबी सिंगल सीट, हैंड गार्ड, अलॉय व्हील्स, फ्रंट डिस्क ब्रेक और डिजिटल स्पीडोमीटर जैसे फीचर्स मिल सकते हैं। इसमें कंपनी एक से ज्यादा वेरिएंट को ऑफर कर सकती है।

पहले लीक हुई थी यह डिटेल

CNG Bike के डिजाइन की जानकारी लॉन्च से पहले ही लीक हो गई थी। लीक हुए ब्लूप्रिंट में बाइक की चेसिस, सीएनजी और पेट्रोल टैंक की जानकारी सामने आई थी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक लीक हुई जानकारी से यह पता चल रहा था कि बाइक में डबल क्रैडल फ्रेम को दिया जा सकता है जिसके साथ सिलेंडर को रोकने के लिए ब्रेसिस लगे होंगे। बाइक में सीएनजी के सिलेंडर को सीट के नीचे की ओर दिया जा सकता है। वहीं सीएनजी भरने के लिए नोजल को सामने की ओर दिया जा सकता है। इसके साथ ही इसमें एक छोटा पेट्रोल टैंक भी दिया मिलेगा।

टाटा एल्ट्रॉज रेसर के लॉन्च से पहले जारी हुआ नया टीजर, बुकिंग भी हुई शुरू

Tata Motors की ओर से कई बेहतरीन एसयूवी और कारों को ऑफर किया जाता है। कंपनी की ओर से जल्द ही नई कार के तौर पर Tata Altroz Racer को लॉन्च किया जाएगा। लॉन्च से पहले प्रीमियम हैचबैक का नया टीजर जारी किया गया है जिसमें एक खास फीचर की जानकारी मिल रही है। रिपोर्ट्स के मुताबिक इसकी बुकिंग को भी शुरू कर दिया गया है।

नई दिल्ली। भारत की प्रमुख कार निर्माता Tata Motors की ओर से जल्द ही प्रीमियम हैचबैक सेगमेंट में Altroz Racer को लॉन्च किया जाएगा। लॉन्च से पहले इसका टीजर जारी किया गया है, जिसमें एक फीचर की जानकारी मिल रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इस कार के लिए बुकिंग को भी शुरू कर दिया गया है। कंपनी इसे कब लॉन्च करेगी हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Tata Altroz Racer का जारी हुआ टीजर

टाटा मोटर्स की ओर से अपनी प्रीमियम हैचबैक कार Altroz के नए वेरिएंट Racer के लॉन्च से पहले नए टीजर को जारी किया गया है। इस टीजर में कार के एक्सटीरियर लुक की झलक दिखाई गई है। इस टीजर में दिखाई गई झलक के मुताबिक इसे ड्यूल टोन स्कीम के साथ लाया जाएगा। कार में वाइट स्ट्राइप्स को भी दिया जाएगा और इसमें इलेक्ट्रिक सनरूफ को भी दिया जाएगा। इसके अलावा कंपनी ने टीजर में इसके एग्जॉस्ट नोट को भी सुनाया है।

शुरू हुई बुकिंग

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कुछ डीलरशिप पर इसके लिए बुकिंग को भी शुरू कर दिया गया है। हालांकि कंपनी की ओर से अभी इसकी बुकिंग को शुरू नहीं किया गया है। ग्राहक Altroz Racer के लिए 21 हजार रुपये में बुकिंग करवा सकते हैं।

कितना दमदार होगा इंजन

कंपनी की ओर से अभी इसकी जानकारी नहीं दी गई है, लेकिन इसमें 1.2 लीटर का टर्बोचार्ज इंजन दिया जा सकता है जिसके साथ छह स्पीड मैनुअल ट्रांसमिशन दिया जाएगा। इस इंजन से कार को 118 बीएचपी की पावर और 170 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा।

कैसे होंगे फीचर्स

कंपनी की ओर से इसमें 10.25 इंच का इंफोटेनमेंट सिस्टम, वायरलेस चार्जर, ऑटो क्लाइमेट कंट्रोल, 360 डिग्री कैमरा, फ्रंट वेंटिलेटिड सीट्स, ड्राइविंग के लिए कई मोड्स, सिंगल पेन इलेक्ट्रिक सनरूफ और ग्रे कलर का इंटीरियर दिया जा सकता है। इसमें स्टेयरिंग पर ऑडियो कंट्रोल के साथ ही क्रूज कंट्रोल को भी दिया जा सकता है।

कब होगी लॉन्च

टाटा मोटर्स की ओर से जल्द ही Altroz के Racer वेरिएंट को भारतीय बाजार में लॉन्च किया जाएगा। कंपनी की ओर से इस कार को जून के दूसरे हफ्ते में लॉन्च किया जाएगा।

कितनी होगी कीमत

Tata Altroz Racer का बाजार में सीधा मुकाबला हुंडई की i-20 NLine से होगा। ऐसे में उम्मीद की जा रही है कि इसके नए वर्जन रेसर को कंपनी की ओर से 10 से 13 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के आस-पास लॉन्च किया जा सकता है। कंपनी की ओर से अल्ट्रोज के मौजूदा वर्जन को 6.64 लाख रुपये की शुरूआती एक्स शोरूम कीमत पर ऑफर किया जाता है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 10.80 लाख रुपये तक है।

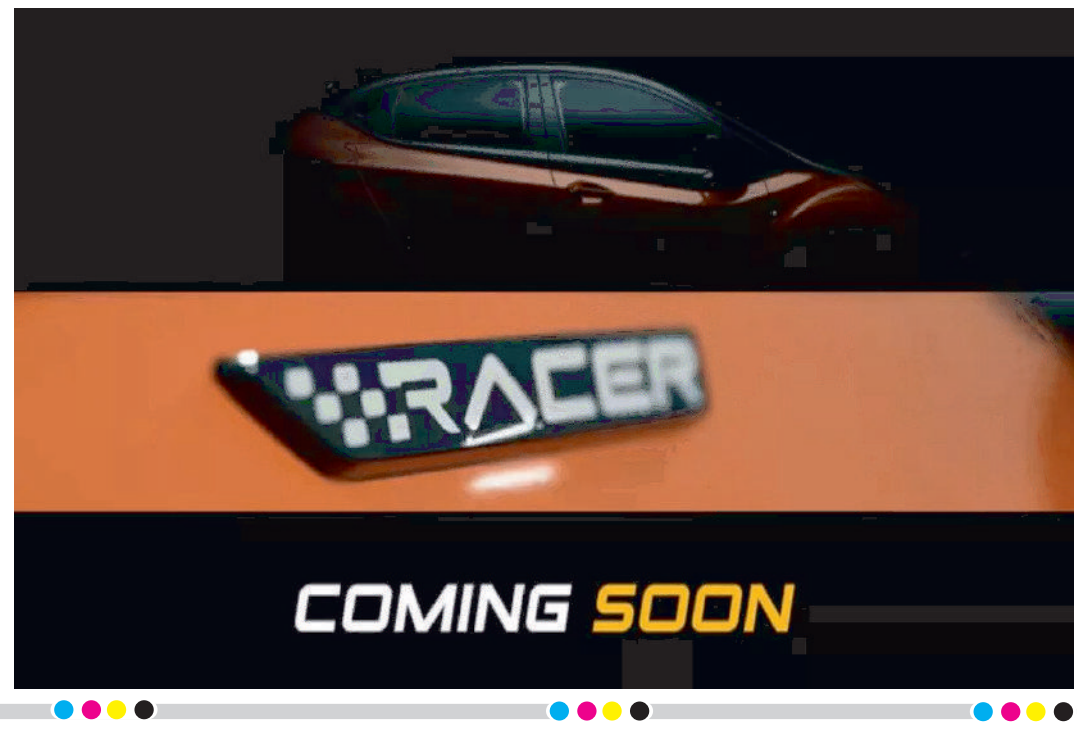

हिंदी पत्रकारिता दिवस और हिमाचली मीडिया

अनुज आचार्य

हिमाचल प्रदेश में बीते 5 दशकों से साक्षरता बढ़ने और लोगों की साहित्यिक अभिरुचियों के परिष्कृत होने तथा वर्तमान में इंटरनेट के बढ़ते उपयोग से सोशल मीडिया के दौर में लोगों के रचनात्मक क्रियाकलापों में भी व्यापक परिवर्तन आया है...

हिंदी के पहले समाचार पत्र उदन्त मार्तंड (1826) से हिंदी पत्रकारिता की शुरुआत मानी जाती है जिसके संपादक पंडित जुगल किशोर थे। चूंकि साप्ताहिक समाचार पत्र उदन्त मार्तण्ड की शुरुआत 30 मई 1826 के दिन हुई थी, इसलिए 30 मई को प्रति वर्ष हिंदी पत्रकारिता दिवस के रूप में मनाया जाता है'

आज भारतवर्ष में हिंदी पत्रकारिता दिवस की धूम है। ऐसे में हिंदी पत्रकारिता दिवस के बहाने हिमाचली मीडिया पर चर्चा करना बेमानी न होगा। हिमाचल प्रदेश एक पर्वतीय प्रदेश है। यहां की आबादी दूरदराज के गांवों से लेकर ऊंचे पहाड़ों में कठिन परिस्थितियों में जीवन यापन करती है। जब प्रदेश में सडक़ों का विस्तार नहीं हुआ था और वर्तमान की तरह इंटरनेट आधारित संचार सुविधाएं उपलब्ध नहीं थीं तो आप सहज कल्पना कर सकते हैं कि किस प्रकार से यहां के लोगों की बौद्धिक एवं साहित्यिक अभिरुचियों का परिमार्जन हुआ होगा? कैसे उन्हें समाचारपत्र, पत्रिकाएं, पुस्तकें और साहित्य की सामग्री मिलती रही होगी और कैसे हिमाचल प्रदेश का हिंदी मीडिया अपने उद्भव, उत्थान से आगे बढक़र पर्वतीय प्रदेश की पत्रकारिता और साहित्यिक सरोकारों के बरक्स खरा उतरा होगा? शायद इसलिए कहा भी जाता है कि पर्वतीय प्रदेश में पत्र-पत्रिका का प्रकाशन पत्थर से पानी निकालने के समतुल्य है। हिमाचल प्रदेश यूं तो पर्वतीय राज्य है और पहाड़ी यहां की मुख्य बोली है, तथापि कई जिलों और उपमंडलों की अपनी-अपनी बोलियां भी हैं जो पूरे प्रदेश में भिन्नता लिए हुए हैं। सरकारी कामकाज की प्रथम भाषा के रूप में हिंदी को मान्यता प्राप्त है और बीते तीन-चार दशकों से पठन-पाठन, घरों-स्कूलों में सामान्य बोलचाल की भाषा के रूप में हिंदी ने अपने जड़ें मजबूत की हैं।

ऐसे दौर में स्वाभाविक है कि हिमाचल प्रदेश में हिंदी मीडिया की भूमिका भी बढ़ी है। हिमाचल प्रदेश में पत्रकारिता अथवा हिंदी मीडिया का उदय, उद्भव उन्नीसवीं सदी के पांचवें दशक में शिमला से 'मॉर्निंग मॉनिटर' के प्रकाशन से हुआ था। सन 1848 में शिमला से द शिमला इंटेलिजेंसर, शिमला एडवरटाइजर, शिमला गार्जियन, द शिमला वीकली, टाइम्स लिटिल वीकली आदि का प्रकाशन होता था और इनके संपादक भी अंग्रेज ही होते थे। इसी वर्ष पहले भाषाई समाचार पत्र 'शिमला अखबार' का प्रकाशन शेख अब्दुल्ला द्वारा किया गया था और हिमाचल में भाषाई पत्रकारिता का श्रीगणेश इसी से माना जाता है। तब से लेकर वर्तमान समय तक हिमाचल प्रदेश में पत्रकारिता में अनेक उतार-चढ़ाव आए हैं। यह खुशी की बात है कि वर्तमान समय में भी क्षेत्रीय, प्रादेशिक और हिमाचली संस्करणों सहित राष्ट्रीय समाचार पत्रों का प्रकाशन हिमाचल की पुण्य धरा से हो रहा है। समाचार पत्र और पत्रिकाएं मानव समाज की दिशा निर्देशिका मानी जाती हैं। समाज के भीतर घटित घटनाओं से लेकर परिवेश की समझ उत्पन्न करने का कार्य पत्रकारिता का प्रथम कर्तव्य एवं महत्वपूर्ण दायित्व है। पाठकों में राजनीतिक, सामाजिक चिंतन की समझ पैदा करने के साथ विचार की सामथ्र्य उत्पन्न करने में इनकी प्रमुख भूमिका शुरू से ही रहती आई है। यह खुशी की बात है कि हिमाचली पत्रकारिता और साहित्य लेखन ने अपने इस दायित्व का बखूबी निर्वहन किया है। इसी प्रकार से हिंदी साहित्य और पत्रकारिता का आपस में अन्योन्याश्रित संबंध है।

हिमाचल प्रदेश में बीते 5 दशकों से साक्षरता बढऩे और लोगों की साहित्यिक अभिरुचियों के परिष्कृत होने तथा वर्तमान में इंटरनेट के बढ़ते उपयोग से सोशल मीडिया के दौर में लोगों के रचनात्मक क्रियाकलापों में भी व्यापक परिवर्तन आया है, तथापि संतोष की बात है कि अभी भी समाचारपत्रों ने पाठकों के एक बड़े वर्ग को अपने साथ जोड़े रखा हुआ है। जहां तक हिमाचल के दैनिक समाचार पत्रों में साहित्यिक पत्रकारिता का सवाल है तो मोबाइल एवं इंटरनेट के जमाने में जब लोगों का रुझान पारंपरिक रूप से पुस्तकें पढऩे की ओर से घटा है, तो समाचार पत्रों ने इस गैप को भरने का कार्य बखूबी किया है। आज के दौर में अखबारों ने समाचारों के अलावा खोजी पत्रकारिता, कविता, कहानी, गजल, गीत, निबंध, लघु कथाएं, एकांकी, संस्मरण, यात्रा वृतांत, शब्द चित्र, सामान्य ज्ञान, पाठकों के पत्र, रिपोर्ताज, पुस्तक समीक्षाएं, आलोचना, बच्चों का कोना, उपन्यास और आलेखों को समावेशित करके गागर में सागर भरने जैसा कार्य किया है। इसके अतिरिक्त समाचार पत्र धार्मिक, मनोरंजन, प्रेरणास्पद और सामान्य ज्ञान के विशेष परिशिष्ट प्रकाशित कर अपने पाठकों को एक जगह समस्त मूल्यवान जानकारी एवं साहित्य उपलब्ध करवा रहें हैं। हिमाचल प्रदेश में हिंदी समाचार पत्रों ने लोगों को साहित्य पढऩे की ओर प्रवृत्त करने के लिए साप्ताहिक विशेषांक भी शुरू किए हैं।

हिमाचली मीडिया में ऐसे बहुत से श्रेष्ठ संपादक हैं जिनकी साहित्यिक सोच, ज्ञान, योग्यता और अभिरुचि से उनके द्वारा संपादित दैनिक समाचार पत्रों की भाषा, वस्तु विषय, कलेवर, साहित्यिक सामग्री से उस पत्र की ख्याति बढ़ी है और पाठकों का एक बड़ा वर्ग उनकी ओर आकर्षित हुआ है। अनेक समाचार पत्रों द्वारा हिमाचली मुद्दों पर लेखन के लिए प्रादेशिक लेखकों को प्रोत्साहित करने से पिछले दो दशकों में कई हिमाचली लेखक अपनी शानदार लेखनी एवं आलेखों के बलबूते पत्रकारिता के आसमान में उज्ज्वल नक्षत्र बनकर चमक बिखेर रहे हैं। आवश्यकता है कि मीडिया हाउस ऐसे स्तंभकारों को सम्मानित कर उनकी हौसला अफजाई भी करें। यह सत्य है कि भारतीय पत्रकारिता की उद्भव भूमि कोलकाता रही है, लेकिन हिंदी मीडिया को उसके शिखर तक ले जाने और संवर्धन का श्रेय काशी/इलाहाबाद को जाता है। काशी (वाराणसी) और प्रयागराज को साहित्यकारों/पत्रकारों की उद्गम स्थली भी कहा जाता है। हिंदी के पहले समाचार पत्र उदन्त मार्तंड (1826) से हिंदी पत्रकारिता की शुरुआत मानी जाती है जिसके संपादक पंडित जुगल किशोर थे। चूंकि साप्ताहिक समाचार पत्र उदन्त मार्तण्ड की शुरुआत 30 मई 1826 के दिन हुई थी, इसलिए 30 मई को प्रतिवर्ष हिंदी पत्रकारिता दिवस के रूप में मनाया जाता है। आज हिंदी पत्रकारिता दिवस के पावन अवसर पर दिव्य हिमाचल परिवार के सभी प्रबुद्ध पाठकों, लेखकों, पत्रकारों और साहित्यकारों को बहुत-बहुत हार्दिक बधाइयां एवं शुभकामनाएं।

अनुज आचार्य

संपादक की कलम से

बुजुर्गों के बीमे के सच

प्रधानमंत्री मोदी की एक चुनावी गारंटी है कि अब 70 वर्ष की उम्र या उससे अधिक के प्रत्येक नागरिक को 'आयुष्मान' योजना का लाभ मिलेगा। वे 5 लाख रुपए तक का इलाज मुफ्त ही करा सकेंगे। यदि प्रधानमंत्री की भावना वरिष्ठ नागरिकों को स्वास्थ्य कवर देने की थी, तो इस आयु-वर्ग के दायरे में 65 साल के वरिष्ठ नागरिक भी रखे जा सकते थे, क्योंकि इस उम्र तक बीमारियां पकने लगती हैं और इलाज की सख्त जरूरत होती है। इस सूची में मधुमेह, रक्तचाप, हृदय रोग, कैंसर, किडनी, प्रोस्टेट से जुड़ी बीमारियां रखी जा सकती हैं, जो उम्र के साथ-साथ बढऩे लगती हैं। यदि प्रधानमंत्री ने ऐसा किया होता, तो न केवल देश के बुजुर्ग उन्हें ढेरों आशीर्वाद देते, बल्कि सकल जीवन प्रत्याशा भी बढ़ती। दरअसल बूढ़ों को स्वास्थ्य कवर देना बेहद गंभीर और जरूरी मुद्दा है, क्योंकि स्वास्थ्य बीमा कंपनियां वरिष्ठ नागरिकों को कवर देने से कन्नी काटती हैं या साफ इंकार कर देती हैं। अधिकतर निजी कंपनियों के बीमे की किस्त बेहद महंगी होती है, जिसे बिना पेंशन वाले बुजुर्ग वहन नहीं कर सकते। जो सरकारी सेवाओं में रहे हैं, उनके लिए सीजीएचएस जैसी सुविधाएं ताउम्र उपलब्ध हैं। ऐसे बहुत कम फीसदी लोग हैं। आम आदमी के लिए बीमा कंपनियों की शर्तें इतनी महीन छापी जाती हैं कि उन्हें पढऩा असंभव होता है, लिहाजा बीमा लेने वालों को एजेंट के कथनों पर ही भरोसा करना पड़ता है। सरकारी डाटा ही खुलासा करता है कि मात्र 6 फीसदी आबादी उन वरिष्ठ नागरिकों की है, जिनके पास अपना स्वास्थ्य बीमा कवर है, जबकि भारतीय बीमा नियामक एवं विकास प्राधिकरण (इरडाई) बुजुर्गों की भागीदारी को प्रोत्साहित करता रहा है। यह एक संवैधानिक निकाय है, जिसका गठन संसद में पारित बिल के जरिए किया गया था, ताकि बीमा बाजार पर निगाह रखी जा सके। इसके बावजूद देश और समाज के सबसे संवेदनशील समूह को बीमे के फायदों और जरूरत से बाहर रखा गया है, क्योंकि बीमे की किस्त वाकई बेहद महंगी है।

प्रधानमंत्री की गारंटी 'मास्टर स्ट्रोक' साबित हो सकती थी। इरडाई का ही डाटा है कि 144 करोड़ के देश में 55 करोड़ के पास ही स्वास्थ्य कवर है। औसतन 100 में से 54 कवर सरकार द्वारा प्रायोजित होते हैं। किस्त के तौर पर कमाए गए प्रति 100 रुपए में से 91 रुपए व्यक्तिगत और समूह बीमा पॉलिसी से आते हैं। 'पॉलिसी बाजार' नामक बीमा कंपनी के सर्वेक्षण के मुताबिक, देश में 96 फीसदी लोग स्वास्थ्य बीमा जानते हैं, लेकिन 43 फीसदी ने ही पॉलिसी ले रखी है। औसतन 3 में से 2 लोग महसूस करते हैं कि बीमा किस्त बेहद महंगी है। नीतियां और शर्तें बेहद पेचीदा हैं, लूट भी लेती हैं, भुगतान की शर्तें बिल्कुल अस्पष्ट हैं और कई बीमारियों को कवरेज की सूची से बाहर रखा गया है और बीमाधारक को यह स्पष्ट नहीं किया जाता। यह धोखाधड़ी अधिकतर कंपनियां कर रही हैं। दरअसल स्वास्थ्य बीमा का बाजार बड़ा प्रतियोगी है। बीते 2023 के अंत में 29 कंपनियां ऐसी थीं, जो स्वास्थ्य की नीतियां और शर्तें तय कर रही थीं। गैर-जीवन बीमा बाजार का यह सबसे बड़ा हिस्सा, भाग है। बेशक यह बीमा-क्षेत्र बढ़ भी रहा है, क्योंकि लोग स्वास्थ्य के प्रति ज्यादा सचेत होने लगे हैं।

2023 में ही स्वास्थ्य बीमा की किस्त 21 फीसदी बढ़ाई गई, जो गैर-जीवन बीमा क्षेत्र की सकल वृद्धि से 7 फीसदी अधिक थी। भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) जीवन बीमा के बाजार का सिरमौर अब भी है। अब भी उसमें भारत सरकार की हिस्सेदारी सर्वाधिक है। वह स्वास्थ्य बीमा के क्षेत्र में भी उतरने और धमक मचाने पर विचार कर रही है। यह कंपनी 'मील पत्थर' स्थापित करने में भी सक्षम है। एलआईसी का सालाना मुनाफा 40,000 करोड़ रुपए से अधिक का है, लिहाजा उसके शेयर की कीमत, बीते अक्तूबर से ही, दोगुनी हो गई है। बड़ा और महत्वपूर्ण सवाल यह है कि आम बीमा उपभोक्ता के लिए एलआईसी के संभावित प्रयास के मायने और फायदे क्या होंगे? क्या बुजुर्गों की उपेक्षित जमात को रियायती किस्त पर स्वास्थ्य कवर मिल सकेगा? या प्रधानमंत्री मोदी ही अपने तीसरे कार्यकाल में कोई सामाजिक पहल करेंगे?

राय

हिमाचल के सियासी गुनाह-5

छोटे राज्य की बड़ी उम्मीदें, सामाजिक महत्त्वाकांक्षा और सियासी किलेबंदी के बीच बदलते संबोधन और आर्थिक चुनौतियों के दबाव को समझना जरूरी है। ऐसे में आर्थिक संसाधनों पर पर्यावरण की बाड़बंदी, सत्तर फीसदी हिमाचल की मिलकीयत पर वन विभाग का कब्जा, फौज की भर्ती में कोटा, लैंड सीलिंग एक्ट की मान्यता में नए समाज का गठन और सामाजिक सुरक्षा के बढ़ते दायरों में घटते-सिकुड़ते वित्तीय अनुशासन के मायने जब सामने आते हैं, तो राजनीति अपनी-अपनी कब्र में गुनाह करती रही है। हिमाचल की राजनीति को संकीर्णता से भरने के लिए पार्टियों का केंद्रीय नेतृत्व भी काफी हद तक जिम्मेदार रहा है। हम राजनीति के अवतार में दो मुख्यमंत्रियों वीरभद्र सिंह और शांता कुमार के इतिहास में कांग्रेस और भाजपा के संघर्ष में गुनाह देख सकते हैं। कांग्रेस को वीरभद्र सिंह का वर्चस्व और भाजपा को शांता की साफगोई पसंद नहीं आई और इसके नतीजे में हम हिमाचल के नए सियासी मुखौटे देख सकते हैं। दोनों ही राजनीतिक दलों का चरित्र अलोकतांत्रिक व जनापेक्षाओं के विपरीत केवल सिपहसालारों की शिनाख्त कर रहा है। एक अजीब सी कसरत में हिमाचल की राजनीति और अंकगणित पर विभाजित प्रदेश का दिल जीतने के लिए वित्तीय अनुशासनहीनता को मिल रही स्वीकारोक्ति, भविष्य से सबसे बड़ा गुनाह है। इतना ही नहीं प्रशासनिक तौर पर सरकारी कार्यसंस्कृति खिलौना बन कर रह गई है। कभी 'नो वर्क-नो पो' जैसे नियम ईजाद करने वाला राज्य अब सरकारी कर्मचारियों को मतदाता सूची में देखते-देखते, केवल खुशामद करने तक ही सिमट गया है।

नतीजतन राजनीति ने इसी गठजोड़ में प्रदेश के सलूक और उसूल को कर्मचारी राजनीति का बंधुआ बना दिया। आश्चर्य यह कि राजनीति का सबसे कमजोर अर्थशास्त्र हिमाचल में स्वीकृत हो गया है। यहां मंत्रिमंडल की सामूहिक जिम्मेदारी के बजाय मुख्यमंत्री के पद का वर्चस्व अंगीकार होता है, तो सामने आक्रोश की दीवारों पर चढ़ कर नेताओं का अस्तित्व टूट रहा है। इतना ही नहीं मंत्री अब राजनीति के धुरंधर नहीं, बल्कि अपने-अपने क्षेत्र के मंत्री हो गए हैं। इसलिए सरकारें पुरानी लकीरें पीटतीं-पीटतीं, नए ताजियों की लिखावट में गुम हो जाती हैं। मिशन रिपीट के अफलातूनी स्पर्श ने वित्तीय जोखिम की राहें बढ़ा दीं, जबकि जनता वर्षों से सरकारों को पीट रही है और हर सरकार को नाको चने चबाने पड़ रहे हैं, फिर भी राजनीति अपनी धुरी में सत्ता से खुद ही गुनाह कर बैठती है। आज भी भौगोलिक विषमताओं में शिलान्यासों के रूठे पत्थर शिकायत करते हैं, फिर भी हर चुनाव एक डायलाग सरीखा हो जाता है। केंद्र की अंगुली पकड़ते-पकड़ते हिमाचल ने ऐसी योजनाएं पाल लीं, जो सिर्फ केंद्रीय भीख की मुनादी ही बनती रहीं। प्रदेश को मिली दो स्मार्ट सिटी परियोजनाओं का कार्यान्वयन बताता है कि सियासत किस तरह गुनहगार हो सकती है।

इस दौरान जो शहरी विकास मंत्री बने या जिन सरकारों ने शिलान्यास किए, उनकी औकात में हजारों दर्पण टूट कर जनता की आंखों में चुभ रहे हैं, फिर भी राजनीति को जो चुभता है उसी के खिलाफ इबारतें और कार्रवाइयां बनती हैं। राजनीति में छुपा क्षेत्रवाद नहीं चाहता कि शिमला, मंडी और कांगड़ा जैसे बड़े जिले अस्तित्व में रहें और यही चुगलियां हर सरकार में पैदा हुए क्षेत्रवाद का गुनाह बताती हैं। आश्चर्य यह कि प्रदेश में कुछ वीभत्स घटनाक्रम के बावजूद कोई राजनीतिक आंदोलन नहीं होता। राजनीति अब कद से पद नहीं तराशती, बल्कि जुंडलियों में महिमामंडन तलाशती है। इस बार भी नेताओं का चरित्र और सियासी वैमनस्य देखना है तो चुनाव प्रचार के गिरते स्तर और सोशल मीडिया में उतरते युद्ध में देखा जा सकता है।

नए युग के नए सुल्तान

रिश्वत लेना और देना अपराध है। जब से इस देश ने होश संभाली, आजादी के खुलेपन में सांस ली, तब से यहां हर सरकारी कार्यालय में ऐसे सूचनापट्ट देख कर लोग चौंक उठते थे। एक स्वस्थ और मुक्त समाज के सजग प्रहरी बनने की लालसा उनके मन में जाग उठती। एक ऐसा साफ-सुथरा नैतिक मूल्यों को समर्पित समाज लोगों के दृष्टि बिम्ब में उभरता जिसमें राम राज लौट आया है। लोग आदर्श जीवन जीते हुए देश के नवनिर्माण में जुटे हैं। लेकिन धीरे-धीरे समय की धूल आदर्शों के इस धुले पुंछे चेहरे पर पड़ती रही। आजकल तलाश भी करो तो रिश्वत की मनाही करने वाले ये सूचनापट्ट कहीं अपना प्रभाव दिखाते नजर नहीं आते। बल्कि एशिया के सत्तरह देशों का सर्वेक्षण ट्रांसपेरेंसी इंटरनैशनल जैसी एक खोजी संस्था ने किया है। उनका सबसे प्रमुख निष्कर्ष इस शोध में यह रहा कि इन सत्तरह देशों में रिश्वतखोरी में कोई देश अव्वल नम्बर पर है तो वह है भारत। एक ऐसा देश जिसे हर प्रतियोगिता में पिछडऩे की आदत हो गई है। जिस देश के नागरिकों को हर विकास और सुधार प्रतियोगिताओं की कतार में अन्तिम व्यक्ति के रूप में खड़े होने का दर्जा मिला हो, वहां एक स्थापित खोज यह कह रही है कि एशिया के इन देशों में भारत यहां अव्वल नम्बर पर आ गया है। यह उन लोगों के लिए कितने गर्व की बात हो सकती है, जो कल एक फटीचर झोंपड़ी भी न पा सके थे, आज अट्टालिका हो गए। कल उधार की साइकिल ले उडऩे की फिराक में रहते थे, आज बीएमडब्ल्यू को भी बीते युग की बात कह उससे आलीशान गाड़ी की तलाश में लगे हैं।

जो अप्रमाणित था उसे प्रमाणित करने में लगे हैं कि हथेलियों पर भी सरसों उगाई जा सकती है। जिंदगी तेजी से बदल रही है। कितनी नई बातें हमारी जिंदगी का सामान्य हिस्सा बन गई हैं। उसमें एक बात यह भी है कि इस देश के अधिकांश नागरिक उन सब आजाद बरसों में एक नया सत्य पा गए कि यहां कोई भी काम सीधे और सच्चे रास्ते से नहीं हो सकता। ऐसे रास्तों की तलाश उन फुटपाथी लोगों के लिए बच गई है, जो हर मंजिल को पाने के लिए शार्टकट की तलाश करते हैं और सफल होते हैं। कभी कहा जाता था 'प्यादे से फर्जी भयो टेढ़ो-टेढ़ो जाये।' अब बात बदल गई, कहते हैं कि प्यादे से सुल्तान भयो, हर टेढ़े और गलत को सीधा और सही बता कर। चले थे राम युग की स्थापना के प्रयास में देश की आजादी के बाद। राम युग तो कहीं आदर्शवाद के चुकते धुंधलके में खो गया। पल्ले आया रावण राज जिसमें भ्रष्ट नेताओं, ठोंसू अफसरों और धाकड़ माफिया की तिकड़ी हर इलाके में धड़ल्ले से अपना कीला ठोंकती है और इसे नव समाज का नाम देती है। तरक्की का मार्ग प्रशस्त होता जा रहा है। अब तो इस रावण राज का सहयोगी विभीषण राज भी हो गया, जिसमें चुनाव जीते आया रामों पर गया रामों का ठप्पा लग जाता है। उस कानूनी और सामाजिक स्वीकृति भी मिल जाती है।

रातोंरात बिसात उलट देने की तरह पांसा बदल देने वाले रंग बदल देते हैं और फिर खुलेआम कामचलाऊ घोड़ों की बोली अरबी घोड़ों के दाम पर लग जाती है। अभी तो 'एक देश एक कर, एक देश एक बाजार', 'एक देश एक ड्राइविंग लाइसैंस' का नारा लगाने वालों ने 'एक देश एक चुनाव' का नारा उठाया ही है कि यह अपने नाती-पोतों तक अपनी गद्दी की विरासत सुरक्षित रख देने का सपना देखने के नीचे से उनकी बैसाखियां किसने खींच दी? अभी तक नहीं जानते कि आजकल नए दावों, नई घोषणाओं और नए वचनों का कोई मोल नहीं रह गया। जमाना इतनी तेजी से बदल रहा है कि कल की घोषणा आज एक ऊल-जलूल प्रहसन बन कर रह जाती है, केवल एक प्रहसन।

सुरेश सेठ

विचार

सुनो भई साधो

किसी की बात सुनना, ध्यान से सुनना, बिना किसी पूर्वाग्रह के सुनना तपस्या सरीखा है क्योंकि वह समय जो हम सामने वाले को देते हैं, वह हमारा जीवन है। हमने जितना समय सामने वाले की बात सुनने में लगाया, हमारा जीवन उतना गुजर गया, उतना कम हो गया, पर वह समय सार्थक हो गया क्योंकि सामने वाले को सहानुभूतिपूर्वक सुनने वाला मिल गया, उनका दिल हल्का हो गया। यह किसी तपस्या से कम नहीं है। सहज संन्यास में तो हम संन्यासियों की दिनचर्या का यह महत्वपूर्ण अंग ही है कि हम किसी का दुख बंटाएं, किसी की बात धीरज से सुनें, किसी का दर्द बांटें। आत्महत्या के जितने भी मामले होते हैं, उनके पीछे एक मुख्य कारण यह भी है कि आत्महत्या करने वाले के पास कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो उनकी बात सुनता, समझता, उन्हें धीरज बंधाता और उनमें जीवन की जिजीविषा को फिर से जगाता'

यह परम सत्य है कि ज्ञान खुद में शक्ति हो या न हो, पर इसे शक्ति में, ताकत में, रचनात्मक ऊर्जा में परिवर्तित किया जा सकता है। जैसे बिना कर्मकांड के चक्कर में पड़े, सिर्फ भक्तिभाव से ही परमात्मा को वश में किया जा सकता है, वैसे ही किसी दुखी आत्मा के दुख को दूर करने के लिए अक्सर ज्ञान से भी ज्यादा जरूरत इस बात की होती है कि हम धीरज के साथ सामने वाले की बात सुन लें, सिर्फ सुन लें ताकि उनके मन की भड़ास निकल जाए। अपने समय के प्रसिद्ध मनोचिकित्सक डॉ. विक्टर फ्रैंकल ने एक बार एक महत्वपूर्ण घटना का जिक्र करते हुए बताया कि एक बार आधी रात के समय एक महिला ने फोन करके उनको बताया कि वो आत्महत्या करने जा रही है। डॉ. फ्रैंकल उस महिला से लगातार बात करते रहे ताकि वह महिला अपने अवसाद की स्थिति से उबर सके और वे उस महिला को जीवित रहने के कई-कई कारण बताते रहे। आखिरकार वह महिला मान गई और उसने वायदा किया कि वह आत्महत्या नहीं करेगी। इस घटना के कुछ समय बाद जब डॉ. फ्रैंकल उस महिला से मिले तो उन्होंने उससे पूछा कि उनकी किस बात ने उससे सबसे ज्यादा प्रभावित किया जिससे उसने आत्महत्या का विचार त्याग दिया। महिला के उत्तर से वे अवाक रह गए। महिला ने कहा कि उनके किसी तर्क ने उसे प्रभावित नहीं किया। उन्होंने फिर जोर देकर पूछा कि किस बात ने उसे प्रेरित किया जिससे उसने आत्महत्या के विचार से किनारा किया। महिला का उत्तर बहुत आश्चर्यजनक था। महिला ने कहा कि आधी रात के समय भी आप धीरज से मेरी बात सुनते रहे, मेरे लिए इतना ही काफी था। उस महिला का यह उत्तर हम सबकी आंखें खोल देने वाला है।

डॉ. फ्रैंकल उस महिला की बात सुनते रहे, उसका दर्द समझते रहे, अपने तर्क देते रहे, तर्कों ने तो काम नहीं किया, लेकिन बातचीत की इस प्रक्रिया में उस महिला के दिल की भड़ास निकल गई, उसका दिल हल्का हो गया और जीवित रहने की इच्छा फिर से बलवती हो गई। एक कहानी है जो बचपन में पढ़ी थी। शायद मुंशी प्रेमचंद की लिखी कहानी है, कहानी का नाम भी याद नहीं। गूगल पर मैं अब उसे ढूंढ नहीं पाया। कहानी का सार यह है कि एक गरीब तांगे वाला जीवन की कठिनाइयों से जूझ रहा है। वह अपना दुख किसी को सुनाना चाहता है, पर वह जिसे भी कुछ बताने की कोशिश करता, वह अपना ही दुख लेकर बैठ जाता। अंततः तांगे वाला अपने घोड़े से लिपट कर रोते हुए उसे अपना दुख सुनाता है और इस तरह से अपना दिल हल्का कर लेता है। अक्सर जीवन में ऐसे क्षण आते हैं जब कोई हमें अपना दुख बताना चाहता है, अपनी चिंता

जाहिर करना चाहता है, अपनी समस्या के बारे में बात करना चाहता है, लेकिन हम हैं कि सुनते ही नहीं, पूरी बात सुने बिना सलाह देने लग जाते हैं, या तो उसकी गलती निकालने लग जाते हैं या फिर तरह-तरह के हल सुझाने शुरू कर देते हैं। हमने पूरी स्थिति को समझा नहीं, जाना नहीं, समस्या से जुड़े बाकी तथ्यों और लोगों के बारे में कुछ भी जाने बिना सलाह देने पर उतर आते हैं। हम में सुनने का धीरज ही नहीं है। जो व्यक्ति हमें अपनी समस्या बताकर दिल की भड़ास निकालने आया था, हमारे व्यवहार से वह और भी परेशान होकर वापस चला जाता है। परिवारों में भी ऐसा अक्सर होता है। बच्चा अपनी कोई बात मां-बाप को बताना चाहता है, पर मां-बाप के पास फुरसत ही नहीं है।

वे बच्चे को बच्चा समझ कर उसकी बात की उपेक्षा करते चले जाते हैं और समस्या बढ़ती चली जाती है। सच तो यह है कि बहुत से मामलों में समस्याग्रस्त व्यक्ति को हमारी सलाह की आवश्यकता ही नहीं होती, उन्हें बस धीरज से सुन पाने वाला कोई व्यक्ति चाहिए, जो सहानुभूतिपूर्वक उनकी बात सुन ले, कोई सलाह न दे, कोई सुझाव न दे, बस बात सुनता जाए और 'हां'-'हूं' करता रहे। जो व्यक्ति अपनी समस्या बता रहे हैं, समस्या बताते-बताते ही उन्हें कोई कारगर हल भी सूझ सकता है क्योंकि उनका दिमाग समस्या बताने के साथ-साथ समस्या का विश्लेषण भी करता चल रहा है। समस्या से जुड़े होने के कारण उन्हें समस्या के हर पहलू का ज्ञान है, अपनी समस्या के बारे में बताते हुए बातचीत में उन्हें कुछ ऐसे पहलू भी नजर आ गए जिन पर पहले उनकी नजर नहीं गई थी। सामने वाले की बात को सुनना, पूरी बात सुनना, धीरज से सुनना ही मानो सबसे बढिया इलाज है। समस्याओं को सुनते समय धीरज तो बातचीत का एक पहलू है, भागदौड़ वाली इस जिंदगी में जल्दी-जल्दी काम खत्म करने के हम इतने आदी हो चुके हैं कि सामान्य बातचीत के दौरान भी अधिकांश बार हम बात सुनने के लिए बातचीत नहीं करते, बल्कि जवाब देने के लिए बातचीत करते हैं। हम पूरी बात सुने बिना ही, पूरी स्थिति समझे बिना ही, जवाब देने को इतने आतुर होते हैं कि जवाब देने की दो-तीन बार की हमारी कोशिश के बाद ही सामने वाला हमारी मन्शा समझ लेता है और किसी सार्थक संवाद की गुंजायश ही खत्म हो जाती है। यही नहीं, हम व्यवसाय में हों और अपने किसी ग्राहक से बात कर रहे हों तो भी अक्सर बिना उनकी पूरी बात सुने ही हम जवाब देना या सलाह देना शुरू कर देते हैं। इसके विपरीत यदि हम धीरज से पूरी बात सुनने की आदत डाल लें तो हम ग्राहक को बेहतर सेवा दे सकते हैं, व्यवसाय में फल-फूल सकते हैं, नौकरी में तेजी से आगे बढ़ सकते हैं और परिवार में या समाज में बेहतर रिश्ते बना सकते हैं।

किसी की बात सुनना, ध्यान से सुनना, बिना किसी पूर्वाग्रह के सुनना तपस्या सरीखा है क्योंकि वह समय जो हम सामने वाले को देते हैं, वह हमारा जीवन है। हमने जितना समय सामने वाले की बात सुनने में लगाया, हमारा जीवन उतना गुजर गया, उतना कम हो गया, पर वह समय सार्थक हो गया क्योंकि सामने वाले को सहानुभूतिपूर्वक सुनने वाला मिल गया, उनका दिल हल्का हो गया। यह किसी तपस्या से कम नहीं है। सहज संन्यास में तो हम संन्यासियों की दिनचर्या का यह महत्वपूर्ण अंग ही है कि हम किसी का दुख बंटाएं, किसी की बात धीरज से सुनें, किसी का दर्द बांटें। आत्महत्या के जितने भी मामले होते हैं, उनके पीछे एक मुख्य कारण यह भी है कि आत्महत्या करने वाले के पास कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो उनकी बात सुनता, समझता, उन्हें धीरज बंधाता और उनमें जीवन की जिजीविषा को, जीवन जीने की चाह को फिर से जगाता। लब्बोलुबाब यह कि परिवार में, समाज में, व्यवसाय में, पेशेवर जीवन में रहते हुए हम बातचीत की कला सीखें या न सीखें, सुनने की कला में महारत अवश्य हासिल करें, ताकि जीवन सुखमय हो जाए।

स्पिरिचुअल हीलर, सिद्धगुरु प्रमोद जी गिन्नीज विश्व रिकार्ड विजेता लेखक

चलन में मौजूद 500 रुपये के नोट की कुल हिस्सेदारी 86.5 प्रतिशत पर पहुंची: आरबीआई

परिवहन विशेष न्यूज

वार्षिक रिपोर्ट में कहा गया है कि 31 मार्च तक 2000 रुपये के 3.56 लाख करोड़ रुपये के बकाया नोटों में से 97.7 प्रतिशत जनता द्वारा वापस कर दिए गए। वित्त वर्ष 24 में आरबीआई ने सिक्योरिटी प्रिंटिंग पर 5101 करोड़ रुपये खर्च किए जबकि एक साल पहले इसी अवधि में यह 4682 करोड़ रुपये था। वित्त वर्ष 2024 में 500 रुपये के नोटों की संख्या घटकर 85711 रह गई।

मुंबई। कुल मुद्रा में 500 रुपये के नोटो की हिस्सेदारी मार्च, 2024 के अंत तक बढ़कर 86.5 प्रतिशत हो गई है, जबकि एक साल पहले इसी अवधि में यह 77.1 प्रतिशत थी। आरबीआई की वार्षिक रिपोर्ट में इस उछाल का मुख्य कारण मई 2023 में घोषित 2,000 रुपये के नोटों को वापस लेना बताया गया है। इस मूल्यवर्ग की हिस्सेदारी एक साल पहले की अवधि के 10.8 प्रतिशत से घटकर 0.2 प्रतिशत हो गई है।

7.8 प्रतिशत बढ़ी बैंक नोटों की संख्या

मात्रा के हिसाब से 31 मार्च, 2024 तक 5.16 लाख 500 रुपये के नोट थे जबकि 10 रुपये के नोटों की संख्या 2.49 लाख थी। रिपोर्ट में कहा गया है कि वित्त वर्ष 2023-24 बैंक नोटों का मूल्य जहां 3.9 प्रतिशत बढ़ा है वहीं उनकी संख्या में 7.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जबकि पिछले वित्त वर्ष में इसमें क्रमशः 7.8 प्रतिशत और 4.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी।

2000 के नोट वापस लेने से नकली नोटों पर लगी लगाम

2,000 रुपये के नोट वापस लेने के बारे में रिपोर्ट में कहा गया है कि 2016 में नोटबंदी के बाद शुरू किए गए इस मूल्यवर्ग के लगभग 89 प्रतिशत नोट चार साल से अधिक समय से प्रचलन में थे और उन्हें बदलने की आवश्यकता थी। रिपोर्ट में कहा गया है कि इस वापसी का नकली नोटों की संख्या पर भी असर दिखाई दिया है। 2,000 रुपये के नकली नोटों की संख्या एक साल पहले की समान अवधि के 9,806 से बढ़कर 26,000 से अधिक हो गई।

वित्त वर्ष 2024 में घटी 500 रुपये के नोटों की संख्या

वित्त वर्ष 2024 में 500 रुपये के नोटों की संख्या घटकर 85,711 रह गई, जो एक साल पहले 91,110 थी। हाल ही में लॉन्च की गई केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा (सीबीडीसी) या ई-रुपी पायलट पर, वार्षिक रिपोर्ट में कुल बकाया मूल्य 234.12 करोड़ रुपये आंका गया है, जबकि मार्च 2023 में यह 16.39 करोड़ रुपये था।

ई-रुपये का 70 प्रतिशत या 164 करोड़ रुपये से अधिक हिस्सा 500 रुपये के नोटों में है, जबकि 32 करोड़ रुपये या 13.7 प्रतिशत के साथ 200 रुपये के नोट दूसरे स्थान पर हैं।

वार्षिक रिपोर्ट में कहा गया है कि 31 मार्च तक 2,000 रुपये के 3.56 लाख करोड़ रुपये के बकाया नोटों में से 97.7 प्रतिशत जनता द्वारा वापस कर दिए गए। वित्त वर्ष 24 में आरबीआई ने सिक्योरिटी प्रिंटिंग पर 5,101 करोड़ रुपये खर्च किए, जबकि एक साल पहले इसी अवधि में यह 4,682 करोड़ रुपये था।

आरबीआई की वार्षिक रिपोर्ट में कहा गया है कि उसने जनता के बीच मुद्रा के उपयोग पर एक सर्वेक्षण भी किया, जिसमें देश भर के 22,000 से अधिक उत्तरदाताओं ने संकेत दिया कि नकदी स्प्रचलन मेंस है, हालांकि भुगतान के डिजिटल तरीके लोकप्रिय हो रहे हैं।

टाइम मैगजीन की 100 प्रभावशाली कंपनियों में भारत का दबदबा, रिलायंस, टाटा और सीरम हुई शामिल

टाइम मैगजीन ने दुनिया की 100 सबसे प्रभावशाली कंपनियों की लिस्ट जारी की है। इस लिस्ट में तीन भारतीय कंपनियां - रिलायंस इंडस्ट्रीज टाटा ग्रुप और सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया का नाम शामिल है। टाइम मैगजीन ने रिलायंस इंडस्ट्रीज को इंडियाज जगरनॉट टाइटल दिया है। इसके साथ ही उसने रिलायंस और डिज्नी के बीच हुई डील का भी जिक्र किया है।

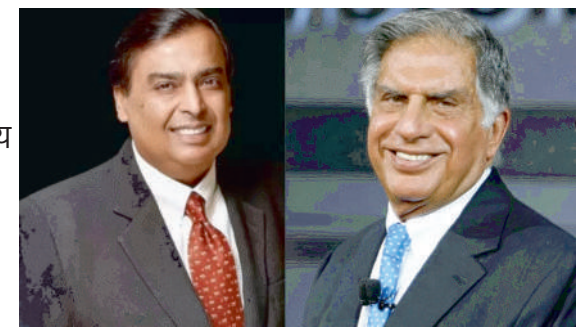

नई दिल्ली। अमेरिका की टाइम (Time) मैगजीन ने 2024 की दुनिया के सबसे प्रभावशाली कंपनियों (Most Influential Companies) की लिस्ट जारी की है। इस लिस्ट में भारत की तीन कंपनियों ने भी अपनी जगह बनाई है। टाइम की शीर्ष 100 प्रभावशाली कंपनियों में जगह बनाने वाली इंडियन कंपनियों में रिलायंस इंडस्ट्रीज, सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया और टाटा ग्रुप शामिल हैं।

टाइम मैगजीन ने अपनी इस लिस्ट को 5 कैटगरी में तैयार किया है, जिसमें लीडर्स, डिसरप्टर्स, इनोवेटर्स, टाइटन्स और पायनियर्स शामिल हैं। रिलायंस और टाटा ग्रुप को टाइटन्स कैटेगरी और सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया को पायनियर्स कैटेगरी में स्थान मिला है। इन पांचों कैटेगरी में 20 कंपनियां शामिल है।

इंडियाज जगरनॉट - रिलायंस इंडस्ट्रीज

टाइम मैगजीन ने रिलायंस इंडस्ट्रीज को 'इंडियाज जगरनॉट' का टाइटल दिया है। इस लिस्ट को शेयर करते हुए टाइम मैगजीन ने रिलायंस के बारे में लिखा है कि इसकी शुरुआत कपड़ा और पॉलिएस्टर कंपनी के रूप में हुई, जो आज दुनिया की टॉप कंपनियों में शुमार है। इसके साथ ही यह भारत की सबसे वैल्युएबल कंपनी भी है।

मुकेश अंबानी के नेतृत्व में रिलायंस इंडस्ट्रीज आज एनर्जी, रिटेल और टेलीकॉम समेत कई कारोबार करती है। इससे पहले साल 2021 में रिलायंस समूह की जियो प्लेटफॉर्म्स ने इस लिस्ट में अपनी जगह बनाई थी। यह भारत की प्रमुख डिजिटल सर्विस प्रोवाइडर और टेक कंपनी है।

टाइम मैगजीन ने अपनी रिपोर्ट में रिलायंस और डिज्नी के बीच हुए 8.5 अरब डॉलर के डील का भी जिक्र किया है। उसका कहना है कि इस डील से रिलायंस की स्ट्रीमिंग सेक्टर में मजबूत पकड़ हो जाएगी।

टाटा और सीरम इंस्टीट्यूट भी लिस्ट में शामिल

टाइम की इस लिस्ट में टाटा ग्रुप भी शामिल है। यह भारत की सबसे पुरानी कंपनियों में से एक है। टाटा ग्रुप के पोर्टफोलियो की बात करें तो इसमें स्टील, सॉफ्टवेयर, घड़ियां, केबल, नमक, अनाज, रिटेल, इलेक्ट्रॉनिक्स, पावर, मोटर व्हीकल, फैशन और होटल तक फैला हुआ है। इसके साथ ही टाटा ग्रुप की टेक कंपनी ने एआई और सेमीकंडक्टर सेक्टर में भी निवेश किया है। इसके साथ ही यह आईफोन असेंबल करने वाली पहली भारतीय कंपनी भी बन गई है।

टाइम मैगजीन ने सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया को भी अपनी लिस्ट में शामिल है। यह दुनिया की सबसे बड़ी वैक्सीन निर्माता कंपनी है। सीरम हर साल 3.5 अरब खुराक बनाती है। कोविड के दौरान कंपनी ने करोड़ों लोगों के लिए वैक्सीन की खुराक बनाई थी।

मुकेश अंबानी की बड़ी प्लानिंग: जियो फाइनेंशियल सर्विसेज ने लॉन्च की जियो फाइनेंस यूजर्स को मिलेंगे ये बेनिफिट्स

जियो फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड (Jio Financial Services Ltd.) ने आज JioFinance ऐप को लॉन्च किया है। कंपनी ने BETA वर्जन में यह ऐप लॉन्च किया है। कंपनी ने अपने बयान में बताया कि जियो फाइनेंस ऐप एक अत्याधुनिक प्लेटफॉर्म है। आज जियो फाइनेंशियल सर्विसेज के शेयर 348 रुपये प्रति शेयर पर बंद हुए। आइए जानते हैं कि इस ऐप पर यूजर्स को कौन-सी सुविधा मिलेगी।

नई दिल्ली। मुकेश अंबानी की कंपनी जियो फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड ने आज JioFinance App को लॉन्च किया है। कंपनी ने BETA वर्जन में यह ऐप लॉन्च किया है।

रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड की सहायक कंपनी जियो फाइनेंशियल सर्विसेज ने स्टॉक एक्सचेंज फाइलिंग में कहा कि जियो फाइनेंस ऐप एक अत्याधुनिक प्लेटफॉर्म है। इस ऐप से डेली फाइनेंस और डिजिटल बैंकिंग सेक्टर में क्रांति आएगी।

क्यों खास है जियो फाइनेंस ऐप?

जियो फाइनेंस के मीडिया रिलीज के अनुसार जियो फाइनेंस ऐप डिजिटल बैंकिंग (Digital Banking), यूपीआई ट्रांजैक्शन (UPI Transaction), क्लेम सेटलमेंट, इंश्योरेंस कंसल्टेंट जैसे काम में मदद करेगा।

इस ऐप के जरिये यूजर्स आसानी से सेविंग और अकाउंट डिटेल्स देख पाएंगे। इस ऐप पर यूजर्स को फाइनेंशियल टैक्नॉलजी के साथ मनी मैनेजमेंट की भी सुविधा मिलेगी।

जियो फाइनेंस के प्रवक्ता ने इस ऐप को लेकर कहा कि हम खुश हैं कि हम बाजार में यूजर्स को सुविधा देने के लिए यह ऐप पेश कर रहे हैं। इस ऐप क उद्देश्य लोगों को वित्त प्रबंधन के तरीके को परिभाषित करना है। इसके अलावा हम चाहते हैं कि यूजर्स को एक ही प्लेटफॉर्म पर सभी फाइनेंस से जुड़ी सुविधा मिले। आज जियो फाइनेंशियल सर्विसेज के शेयर 348 रुपये प्रति शेयर पर बंद हुए।

246 गीगावाट के नए उच्चस्तर पर पहुंची बिजली की अधिकतम मांग, टूटे पिछले सारे रिकॉर्ड

परिवहन विशेष न्यूज

मौजूदा गर्मी के मौसम में सर्वाधिक मांग इस साल 24 मई को 239.96 गीगावाट दर्ज की गई थी। बिजली मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक 23 मई को अधिकतम मांग 236.59 गीगावाट थी जबकि 22 मई को यह 235.06 गीगावाट थी। बिजली मंत्रालय ने इस महीने की शुरुआत में मई के लिए दिन के समय 235 गीगावाट और शाम के समय 225 गीगावाट की बिजली मांग रहने का अनुमान जताया था।

नई दिल्ली। देश के विभिन्न हिस्सों में पड़ रही भीषण गर्मी (Heat Wave) की वजह से बुधवार को बिजली की अधिकतम मांग रिकॉर्ड 246.06 गीगावाट (एक गीगावाट बराबर 1,000 मेगावाट) पर पहुंच गई है। गर्मी से राहत के लिए घरों एवं दफ्तरों में एयर कंडीशनर और कूलर का इस्तेमाल बढ़ने से बिजली की खपत बढ़ रही है।

इससे पहले मंगलवार को बिजली की अधिकतम मांग इस सत्र में 237.94 गीगावाट के उच्चस्तर पर पहुंच गई थी। अब तक का सर्वाधिक बिजली खपत का रिकॉर्ड सितंबर, 2023 में 243.27 गीगावाट का है।

मौजूदा गर्मी के मौसम में सर्वाधिक मांग इस साल 24 मई को 239.96 गीगावाट दर्ज की गई थी। बिजली मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक, 23 मई को अधिकतम मांग 236.59 गीगावाट थी, जबकि 22 मई को यह 235.06 गीगावाट थी। बिजली मंत्रालय ने इस महीने की शुरुआत में मई के लिए दिन के समय 235 गीगावाट और शाम के समय 225 गीगावाट की बिजली मांग रहने का अनुमान जताया था। वहीं, जून के महीने में बिजली की खपत दिन में 240 गीगावाट और शाम के समय 235 गीगावाट रहने का अनुमान है।

मंत्रालय ने इस साल गर्मी में बिजली की अधिकतम मांग 260 गीगावाट तक पहुंचने का अनुमान जताया है। उद्योग विशेषज्ञों का मानना है कि बिजली की मांग सितंबर, 2023 में दर्ज 243.27 गीगावाट के सर्वकालिक उच्चस्तर को पार करने की दिशा में जा सकती है।

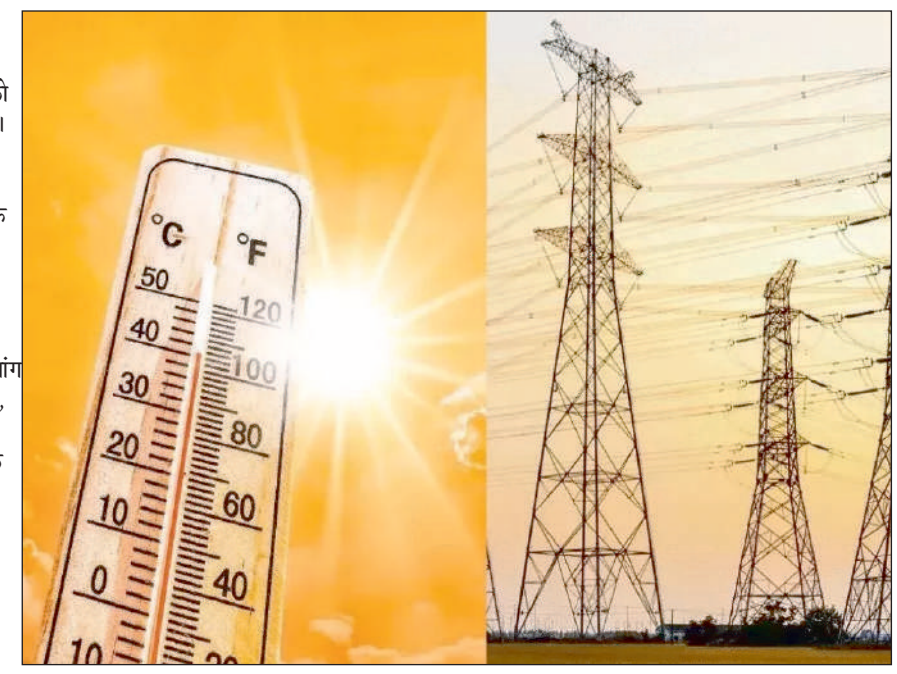

भारत मौसम विज्ञान विभाग ने इस साल मार्च में अनुमान जताया था कि भारत में इस साल अधिक गर्मी और अधिक लू वाले दिन देखने को मिलेंगे। इसके लिए जिम्मेदार अल नीनो की स्थिति मई तक जारी रहने का अनुमान जताया गया था।

मुंबई महानगर में हैं 154 ऊंची बिल्डिंग, 2030 तक शहर में बन जाएंगी 207 नई इमारतें

रियल एस्टेट कंसल्टेंट एनारॉक की रिपोर्ट में पता चला है कि मुंबई महानगर क्षेत्र (MMR) में आने वाले 6 सालों के अंदर गगनचुंबी(Skyscrapers) इमारतों की संख्या 200 पार हो जाएगी। फिलहाल शहर में 40 मंजिलों से अधिक की 154 ऊंची इमारतें हैं और केवल साउथ मुंबई में 103 गगनचुंबी इमारतें हैं। सलाहकारों की मानें तो ऊंची इमारतों के विकास से शहर में भीड़भाड़ कम करने में भी मदद मिलती है।

मुंबई। मेट्रो सिटी में ऊंची इमारतों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। हाल ही में आई रिपोर्ट में पता चला है कि आने वाले 6 सालों में इन 30% तक बढ़ जाएगी। रियल एस्टेट कंसल्टेंट एनारॉक की रिपोर्ट में पता चला है कि मुंबई महानगर क्षेत्र (MMR) में वर्तमान में 40 मंजिलों से अधिक की 154 ऊंची इमारतें हैं और 2030 तक शहर में 200 से अधिक गगनचुंबी (Skyscrapers) इमारतें बनने की उम्मीद है।

रियल एस्टेट कंसल्टेंट एनारॉक के चेयरमैन अनुज पुरी ने कहा कि 2019 से 2023 के बीच, 40 मंजिलों से अधिक की 154 ऊंची इमारतें एमएमआर बाजार में आएंगी।

2030 तक होंगी 200 से अधिक इमारतें

अनुज पुरी ने आगे कहा कि 2024 से 2030 के बीच, 207 और पूरी हो जाएंगी। ये परियोजनाएं पूरे क्षेत्र में पहले ही शुरू हो चुकी हैं। गगनचुंबी इमारतें मुंबई के रियल एस्टेट परिदृश्य का पर्याय हैं, और तेजी से इसे परिभाषित करती हैं। विकास योग्य भूमि की अत्यधिक कमी के अलावा, शहर का विशाल शहरी सौंदर्य इसकी आर्थिक ताकत का एक उपयुक्त प्रतीक बन गया है।

एनारॉक ने कहा कि ऊंची इमारतों के विकास से शहर में भीड़भाड़ कम करने में भी मदद मिलती है। सलाहकार ने कहा कि गगनचुंबी इमारतों में एक ही ऊर्ध्वाधर स्थान में सुविधाएं और आवास शामिल होते हैं, जिससे निवासियों को अवकाश गतिविधियों के लिए परिसर से बाहर जाने की आवश्यकता कम हो जाती है।

यातायात की भीड़ को कम करने के अलावा, ये इमारतें अपने आस-पास बेहतर सड़कों और बेहतर सार्वजनिक परिवहन सुविधाओं सहित कई जरूरी बुनियादी ढांचे के विकास को भी बढ़ावा देती हैं।

साउथ मुंबई में 103 ऊंची इमारतें

डेटा की मानें तो दक्षिण मध्य मुंबई में सबसे ज्यादा यानी 103 ऊंची इमारतें हैं। इनमें से कम से कम 61 पूरी हो चुकी हैं और 42 अन्य 2024-2030 की अवधि के भीतर पूरी हो जाएंगी। मुंबई के मध्य भाग में 40 से ज्यादा मंजिल वाली 87 ऊंची इमारतें हैं। इनमें से 42 पूरी हो चुकी हैं और 45 अन्य बिल्डिंग निर्माणाधीन हैं।

शहर के पश्चिमी भाग में कम से कम 80 ऊंची इमारतें हैं, जिनमें से 50 पूरी हो चुकी हैं और 30 अगले छह वर्षों में पूरी होने वाली हैं। वहीं ठाणे में कम से कम 61 ऊंची इमारतें हैं, जिनमें से सिर्फ 2 मीनारें पूरी हो चुकी हैं और बाकी 59 निर्माणाधीन हैं।

नवी मुंबई में 40 से ज्यादा मंजिल वाली 25 ऊंची इमारतें हैं, जिसमें से 10 पूरी हो चुकी हैं और 15 निर्माण के विभिन्न चरणों में हैं। परिधीय केंद्रीय और पश्चिमी भागों में कुल 5 इमारतें है और सभी पूरी हो चुकी हैं।

बायकुला, वर्ली, लोअर परेल, प्रभादेवी, महालक्ष्मी, मरीन लाइन, मुलुंड, चेंबूर, कांजुरमार्ग, सांताक्रूज़, मलाड, गोरेगांव और ठाणे सिटी जैसे माइक्रो-मार्केट निश्चित रूप से गगनचुंबी इमारतों के हॉटस्पॉट हैं।

रेटिंग एजेंसी Ind-Ra ने जताया अनुमान, RBI Dividend ट्रांसफर करने से कम हो सकता है इंटरेस्ट रेट

RBI Dividend इंडिया रेटिंग्स एंड रिसर्च (Ind-Ra) ने अनुमान जताया है कि आरबीआई डिविडेंड के ट्रांसफर होने से ब्याज दर में नरमी आ सकती है। रेटिंग एजेंसी ने कहा कि लाभांश के ट्रांसफर होने से लाभांश केंद्र सरकार की राजकोषीय स्थिति को बढ़ावा मिलेगा। Ind-Ra को उम्मीद है कि सरकार को आरबीआई के 2.1 ट्रिलियन रुपये के लाभांश हस्तांतरण से तरलता की स्थिति में सुधार होगा।

नई दिल्ली। इंडिया रेटिंग्स एंड रिसर्च (Ind-Ra) ने अनुमान जताया है कि आरबीआई डिविडेंड (RBI Dividend) के ट्रांसफर होने से ब्याज दर में नरमी आ सकती है। आपको बता दें कि हाल ही में आरबीआई ने बताया कि वह भारत सरकार को 2.11 लाख करोड़ रुपये का लाभांश देगा।

रेटिंग एजेंसी ने कहा कि लाभांश के ट्रांसफर होने से केंद्र सरकार की राजकोषीय स्थिति को बढ़ावा मिलेगा। इससे अतिरिक्त खर्च या राजकोषीय समेकन या दोनों का संयोजन हो सकता है। हालांकि, इससे बैंकों को जमा अभिवृद्धि के मामले में लंबी अवधि तक चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा।

रेटिंग एजेंसी ने अपने बयान में कहा कि हमें उम्मीद है कि सरकार को आरबीआई के 2.1 ट्रिलियन रुपये के लाभांश हस्तांतरण से तरलता की स्थिति में सुधार होगा। इससे बैंकिंग सिस्टम डिपॉजिट पर भी दबाव कम होगा। यहां तक कि बैंकों के लिए देनदारियों की लागत पर दबाव कम हो जाएगा

Ind-Ra ने यह भी कहा कि अगर सरकार राशि खर्च करती है, तो इससे बैंकिंग प्रणाली में जमा वृद्धि और सिस्टम में समग्र दरों पर चल रहा दबाव कम हो जाएगा।

मल्लिकार्जुन खडगे -पीएम मोदी पर भडके ,कहा जिसको गांधी नहीं पता तो संविधान भी नहीं पता

परिवहन विशेष न्यूज

एसडी सेठी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे ने आज गुरूवार को ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी मुख्यालय में आयोजित स्पैशल प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने सारी दुनियां को ये बताया कि उनको गांधी के बारे में फिल्म देखने के बाद पता चला ।कितना हास्यप्रद है। इसका मतलब है कि वह संविधान के बारे में भी अनभिज्ञ है। गांधी जी को दुनिया जानती है। यूएन से लेकर हर जगह वो है। पर मोदी जी की नजर में वह है ही नहीं ।खडगे ने पीएम को सलाह दे डाली कि वह चुनाव बाद एकांत में गांधी जी की किताब पढे ।खाली विवेकानंद भवन में जाकर मौन बैठने से क्या होगा ? खडगे ने कहा कि ये चुनाव हमेशा याद रखा जाएगा ।जाती- धर्म-वर्ग छोडकर पूरा देश संविधान को बचाने के लिए सामने आया है ।हमने मुद्दो पर वोट मांगा है। खडगे ने पीएम मोदी के विवेकानंद भवन में ध्यान साधना पर जाने का विरोध कर इसे आचार संहिता का घोर उल्लंघन बताया है। उन्होने कहा कि चुनाव का आखिरी चरण बकाया होने के बाद भी मोदी का ध्यान साधना में जाना चुनाव को प्रभावित करने की संज्ञा दी है। इसके लिए बाकायदा चुनाव आयोग को शिकायत दी है ।खडगे ने प्रेस को संबोधित करते हुए कहा कि पीएम मोदी के 15 दिन के भाषण में 232 बार उन्होने कांग्रेस का नाम लिया। 700 बार मोदी का नाम लिया। 573 बार इंडिया गठबंधन का नाम लिया ।लेकिन बेरोजगारी,मंहगाई, शब्द का जिक्र एक बार भी नहीं किया। पीएम मोदी ने 421 बार मंदिर-मस्जिद बारे में बात की और 224 बार पाकिस्तान, मुस्लिम की बात की। उन्होने कहा कि पीएम मोदी ने 132 करोड का केस किया। कांग्रेस पार्टी के खातों को सीज किया,ताकि हम चुनाव में पीछे हो जाए। हमें संसद में भी चुप करा दिया। संसद सदस्यों को सदन से बाहर करके लोकतांत्रिक मर्यादाओं को ताक पर रखकर तानाशाही रवैया अख्तियार किया गया ।खडगे ने कहा कि लोगो की राय भी यह ही है कि अगर एक बार फिर मोदी को बतौर पीएम मौका दिया तो लोकतंत्र का खात्मा निश्चित है। मंदिर-मस्जिद के मुद्दे को लेकर पीएम अग्रेसिव हैं इसकी शिकायत बाकायदा चुनाव आयोग से भी की। लेकिन चुनाव आयोग की खामोशी सब कुछ बयां कर रही है। खडगे नें राहुल के हाथ में संविधान की किताब का जिक्र करते हुए खुद भी वहीं संविधान की किताब को प्रदर्शित कर बचाने की हुंकार भरी ।गठबंधन का पीएम कौन ? के सवाल पर खडगे ने कहा कि कांग्रेस अगर सीटें ज्यादा लेती है तो सभी दलों की आम राय से पीएम को तय कर लिया जाएगा।

उच्चतम न्यायालय ने एक अखिल भारतीय करदाता संगठन बनाने के लिए ""एक समिति गठित करने का निर्णय लिया"", जो दुनिया में सबसे बड़ा निकाय होगा

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। कोई भी सरकार इस निकाय की मंजूरी के बिना मुफ्त बिजली, मुफ्त पानी, मुफ्त वितरण या ऋण माफी की घोषणा नहीं कर सकती, चाहे कोई भी सरकार शासन कर रही हो। चूँकि पैसा हमारे करदाताओं का है, करदाताओं को इसके उपयोग की निगरानी करने का अधिकार होना चाहिए। राजनीतिक दल प्रलोभन देते रहते हैं। जनता को वोट के बदले मुफ़्त उपहार वितरित करके। जो भी परियोजनाएं घोषित की जाती हैं, सरकार को पहले उनका खाका प्रस्तुत करना होगा और इस निकाय से अनुमोदन प्राप्त करना होगा। यह बात सांसदों और विधायकों के वेतन और उन्हें मिलने वाले अन्य गैर-विवेकाधीन लाभों पर भी लागू होनी चाहिए। क्या लोकतंत्र केवल मतदान तक ही सीमित है ? उसके बाद करदाता के रूप में हमारे पास क्या अधिकार हैं ? करदाताओं को सांसदों, विधायकों को जवाबदेह ठहराने और संसद के कामकाज में बाधा डालने के लिए उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई शुरू करने का अधिकार होना चाहिए। सभी "नौकरों" के बाद उन्हें करदाताओं द्वारा भुगतान किया जाता है। ऐसी किसी भी "मुफ़्त चीज़" को वापस लेने का अधिकार भी जल्द ही लागू किया जाना चाहिए।

प्रधानमंत्री मोदी ने कन्याकुमारी में शुरू की 45 घंटे की ध्यान साधना, धोती पहने और शाल ओढ़े भगवती अम्मन मंदिर में की पूजा-अर्चना

परिवहन विशेष न्यूज

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार शाम से देश के सबसे दक्षिणी छोर पर स्थित कन्याकुमारी के प्रसिद्ध विवेकानंद रॉक मेमोरियल में 45 घंटे की ध्यान साधना शुरू की। इससे पूर्व दोपहर बाद धोती और सफेद शाल ओढ़े मोदी ने अम्मन मंदिर में प्रार्थना की और गर्भगृह की परिक्रमा की। पुजारियों ने एक विशेष आरती की और उन्हें मंदिर का प्रसाद दिया।

कन्याकुमारी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार शाम से देश के सबसे दक्षिणी छोर पर स्थित कन्याकुमारी के प्रसिद्ध विवेकानंद रॉक मेमोरियल में 45 घंटे की ध्यान साधना शुरू की।

पंजाब के होशियारपुर में चुनावी रैली को संबोधित करने के बाद पीएम हेलीकॉप्टर से सीधे कन्याकुमारी पहुंचे और फिर भगवती अम्मन मंदिर में पूजा-अर्चना की। उसके बाद वह नौका पर सवार होकर तट से करीब 500 मीटर दूर समुद्र में चट्टान पर स्थित विवेकानंद रॉक मेमोरियल पहुंचे और ध्यान शुरू किया जो एक जून तक चलेगा।

पीएम मोदी ने की अम्मन मंदिर में पूजा-अर्चना

मालूम हो कि 2019 के लोकसभा चुनाव में चुनाव प्रचार खत्म होने के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने केदारनाथ की गुफा में ध्यान लगाया था। इससे पूर्व दोपहर बाद धोती और सफेद शाल ओढ़े मोदी ने अम्मन मंदिर में प्रार्थना की और गर्भगृह की परिक्रमा की। पुजारियों ने एक विशेष आरती की और उन्हें मंदिर का प्रसाद दिया, जिसमें एक शाल और मंदिर के मुख्य देवता की एक फ्रेमयुक्त तस्वीर शामिल थी।

पीएम मोदी ने शुरू किया ध्यान

इसके बाद मोदी रॉक मेमोरियल पहुंचे और 'ध्यान मंडपम' में अपना ध्यान शुरू किया। ध्यान शुरू करने से पहले प्रधानमंत्री मोदी कुछ देर के लिए मंडपम की ओर जाने वाली सीढ़ियों पर खड़े रहे, वहां से स्मारक के चारों ओर से समुद्र का मनमोहक दृश्य दिखाई देता है। एक जून को ध्यान समाप्ति के बाद कन्याकुमारी से प्रस्थान करने से पहले मोदी संभवतः स्मारक के बगल में स्थित तमिल कवि तिरुवल्लुवर की प्रतिमा देखने भी जाएंगे।

सुरक्षा में लगे 2,000 पुलिसकर्मी

इस बीच, स्वामी विवेकानंद के नाम पर बने प्रसिद्ध स्मारक पर मोदी के 45 घंटे के ध्यान लगाने के कार्यक्रम के मद्देनजर सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। 2,000 पुलिसकर्मियों के साथ-साथ विभिन्न सुरक्षा एजेंसियां चप्पे-चप्पे पर नजर रखे हुए हैं। यही नहीं, भारतीय तटरक्षक बल और भारतीय नौसेना भी समुद्री सीमाओं पर निगरानी बनाए रखे हुए हैं।

स्वामी विवेकानंद की याद में बनाया गया है स्मारक

यह पहली बार है जब प्रधानमंत्री स्मारक पर ठहरेंगे। यह स्मारक स्वामी विवेकानंद की याद में ही बनाया बनाया गया है, जिन्होंने देशभर का दौरा करने के बाद 1892 के अंत में समुद्र के अंदर इन चट्टानों पर तीन दिन ध्यान लगाया था और विकसित भारत का सपना देखा था।

हीटवेव के चलते सियासी पारे के साथ ही बढ़ता मौसमी पारा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

इस समय हीटवेव के कारण जनजीवन पूरी तरह अस्त-व्यस्त होने के साथ ही सड़कों पर कर्फ्यू जैसे हालात हो रहे हैं। असली समस्या तो सरकार के सामने पानी, बिजली और हीटवेव से प्रभावित लोगों को तत्काल इलाज की व्यवस्था सुनिश्चित करना है।

सामान्यतः एक मार्च से लेकर 21 जून तक सूर्य देव धरती के नजदीक होते हैं। देशी पंचाग के अनुसार नौतपा चल रहा है और माना जाता है कि इन नौ दिनों तक गर्मी का असर कुछ अधिक ही रहता है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के प्रमुख मृत्युजंय महापात्र के अनुसार आने वाले दिनों में पश्चिमी विक्षोभ और अरब सागर में नमी के कारण गर्मी से राहत मिलने के आसार अवश्य है। पर सवाल यह है कि इस भीषण लू या यों कहें कि हीटवेव के लिए बहुत कुछ हम भी जिम्मेदार है। आज शहरी करण और विकास के नाम पर प्रकृति को विकृत करने में हमनें कोई कमी नहीं छोड़ी है।

लोकसभा चुनावों के मतदान के चरण जिस तरह से एक के बाद एक पूरे होते जा रहे हैं और सियासी पारा चढ़ता जा रहा हैं उसी तरह से मतदान का अंतिम चरण आने से पहले ही उत्तर, पश्चिम, मध्य और पूर्वी भारत के तापमान में भी दिन प्रतिदिन तेजी आती जा रही है। एक और जहां समग्र मतदान प्रतिशत 2019 के स्तर पर नहीं आ पा रहा हैं वहीं सूर्यदेव को लगता हैं स्वयं से ही तापमान बढ़ाने की हौड़ चल रही हैं। 29 मई को देश की राजधानी दिल्ली का पारा 52 के आंकड़ें को छू गया, हो सकता है इसको लेकर कोई मत भिन्नता हो पर इसमें कोई दो राय नहीं कि दिल्ली का पारा 50 डिग्री से तो ज्यादा ही रहा है। देश के 17 से अधिक शहरों में तापमान उच्चतम स्तर पर चल रहा है। यह एक तरह का प्राकृतिक आपात्काल है। हीटवेव या यों कहें कि लू के थपेड़ों ने जनजीवन को प्रभावित करके रख दिया है। लू या हीटवेव या तापघात के कारण देश के विभिन्न हिस्सों में मौत के समाचार भी आ रहे हैं। तस्वीर का एक पहलू यह है कि अभी तक सही मायने में हमारे देश में हीटवेव को डिजास्टर मैनेजमेंट में पूरी तरह से शामिल नहीं किया गया है। कहीं कहीं सड़कों पर पानी छिड़कने या लोगों को घर या कार्यस्थल से बाहर नहीं निकलने की सलाह दी जाती रही है। लू से बचाव के उपायों खासतौर से खाली पेट नहीं रहने और तरल पदार्थ का अधिक से अधिक सेवन करने की सलाह दी जाती है। 1850 के बाद 2023 का साल सबसे गर्म साल रहा है पर जिस तरह से तापमान दिन प्रतिदिन बढ़ते हुए जन जीवन को प्रभावित कर रहा है उससे साफ हो जाता है कि 1850 के बाद 2023 नहीं बल्कि अब तो 2024 सबसे गर्म साल रहने वाला है। समूचा उत्तरी, पश्चिमी, मध्य और पूर्वी भारत हीटवेव के चपेट में आ गया है। देश की राजधानी दिल्ली के साथ ही राजस्थान, हरियाणा, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, उत्तर प्रदेश, विदर्भ आदि गंभीर हीटवेव से प्रभावित इलाके हैं। राजस्थान के चुरु और फलोदी आदि का पारा तो 50 के आसपास ही चल रहा है। पानी, बिजली और हीटवेव के कारण बीमारी के हालात गंभीर होते जा रहे है। इतनी तेज गर्मी में पेयजल की उपलब्धता, बिजली की आपूर्ति व ट्रिपिंग की समस्या से निजात पाना मुश्किल हो रहा है।

इस समय हीटवेव के कारण जनजीवन पूरी तरह अस्त-व्यस्त होने के साथ ही सड़कों पर कर्फ्यू जैसे हालात हो रहे हैं। असली समस्या तो सरकार के सामने पानी, बिजली और हीटवेव से प्रभावित लोगों को तत्काल इलाज की व्यवस्था सुनिश्चित करना है। आदर्श आचार संहिता लागू होने के बावजूद सभी प्रदेशों की सरकारें बेहतर प्रबंधन कर रही है। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा 29 मई को जहां स्वयं भर दोपहरी सिर पर गमछा लपेट राजस्थान की राजधानी जयपुर में पेयजल व्यवस्था को देखने निकल पड़े तो निश्चित रुप से प्रशासन और आमजन में एक संदेश गया हैं वहीं प्रदेष के सभी जिलों में 28 व 29 मई को दो दिन के लिए सभी प्रभारी सचिवों को प्रभार वाले जिलों में जाकर पानी, बिजली, दवा, ईलाज आदि की व्यवस्थाओं का जायजा लेने भेजकर साफ संकेत दे दिए हैं। गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि जहां दो दिन तक सरकार के वरिष्ठ अधिकारी इस गर्मी के मौसम में अपने कार्यालयों से निकल कर जिलों में स्थानीय प्रशासन व जिले के अधिकारियों के साथ व्यवस्थाओं की समीक्षा कर रहे हैं वहीं आपदा के इस दौर में आवश्यक दिशा-निर्देश देकर लोगों को राहत पहुंचाने में जुट गए हैं। बात यहीं समाप्त नहीं हो जाती क्योंकि मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा और मुख्य सचिव सुधांश पंत स्वयं प्रभारी सचिवों व जिला कलक्टरों सहित अधिकारियों से 31 मई को संवाद कायम कर फीड बैक लेने के साथ ही आवश्यक दिशा-निर्देश देंगे। राजस्थान तो एक उदाहरण है पर कमोबेस इस तरह के प्रयास हीटवेव से प्रभावित अन्य राज्यों में भी किये जा रहे होंगे, इससे इंकार नहीं किया जा सकता।

सामान्यतः एक मार्च से लेकर 21 जून तक सूर्य देव धरती के नजदीक होते हैं। देशी पंचाग के अनुसार नौतपा चल रहा है और माना जाता है कि इन नौ दिनों तक गर्मी का असर कुछ अधिक ही रहता है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के प्रमुख मृत्युजंय महापात्र के अनुसार आने वाले दिनों में पश्चिमी विक्षोभ और अरब सागर में नमी के कारण गर्मी से राहत मिलने के आसार अवश्य है। पर सवाल यह है कि इस भीषण लू या यों कहें कि हीटवेव के लिए बहुत कुछ हम भी जिम्मेदार है। आज शहरी करण और विकास के नाम पर प्रकृति को विकृत करने में हमनें कोई कमी नहीं छोड़ी है। पेड़ों की खासतौर से छायादार पेड़ों की अंधाधुंध कटाई में हमने कोई कमी नहीं छोड़ी तो दूसरी और चाहे गांव हो या शहर आंख मींचकर कंक्रिट का जंगल खड़ा करते रहे और उसका दुष्परिणाम सामने हैं। जल संग्रहण के परंपरागत स्रोतों को नष्ट करने में भी हमने कोई गुरेज नहीं किया। हमारे यहां मौसम के अनुसार खान-पान की समृद्ध परंपरा रही है पर उसे आज भुला दिया गया है। मौसम विज्ञानियों का मानना है कि पहले समुद्र में तापमान बढ़ने के साथ ही आंधी तूफान का माहौल बन जाता था और बरसात होने से लोगों को तात्कालीक राहत मिल जाती थी। पर आज तो समुद्र का तापमान बढ़ने के बावजूद हीटवेव का असर ही अधिक हो रहा है।

ऐसे में अब तात्कालीक व दीर्घकालीक योजनाएं बनाकर भविष्य की रुपरेखा तय करनी होगी। क्योंकि यह तो साफ हो चुका है कि प्रकृति का हमनें इतना दोहन कर लिया है कि हालात निकट भविष्य में सुधरने की लगते नहीं हैं। अब सुविधाओं और प्रकृति के बीच सामंजस्य की और ध्यान देना होगा नहीं तो आने वाले साल और अधिक चुनौती भरे होंगे। कंक्रिट के जंगलों से लेकर हमारे दैनिक उपयोग के अधिकांश साधन तापमान को बढ़ाने वाले ही हैं। इस चुनौती से निपटना ही होगा। अब सम्मेलनों के प्रस्तावों से आगे बढ़कर क्रियान्वयन पर जोर देना होगा।

भविष्य में मेरी विरासत का फैसला ओडिशा के लोग करेंगे : नबीन पटनायक

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड उडीशा

भुबनेस्वरः मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने बड़ा बयान दिया है जबकि इस बात पर चर्चा चल रही है कि बीजेडी में उनका उत्तराधिकारी कौन होगा ? नवीन ने समाचार संगठन को दिए इंटरव्यू में कहा, मेरे उत्तराधिकारी भी के पांडियन नहीं हैं, पांडियन चुनाव में खड़े भी नहीं हुए हैं। इसलिए यह स्पष्ट नहीं है कि इस मामले को इतना तूल क्यों दिया जा रहा है। भविष्य में मेरी विरासत का फैसला ओडिशा के लोग करेंगे। इसके साथ ही मुख्यमंत्री ने स्वास्थ्य के मुद्दे पर भी प्रतिक्रिया दी है। मैं स्वस्थ हूं, मेरी सेहत बहुत अच्छी है। विपक्ष सिर्फ दुष्प्रचार कर रहा है। मैं 27 साल तक पार्टी का अध्यक्ष रहा हूं। अगर मैं स्वस्थ रहा तो इस जिम्मेदारी को निभाऊंगा औरकब मरने के बाद भी लोगों के लिए काम करता रहूंगा।

इसके अलावा नवीन ने कहा कि चुनाव में हमें बहुत अच्छे नतीजे मिलेंगे। विधानसभा और लोकसभा चुनाव में पार्टी को बहुमत मिलेगा। हालाँकि, पिछले 10 वर्षों से मेरे स्वास्थ्य के बारे में अफवाहें आती रही हैं। वे इस तरह का प्रचार इसलिए कर रहे हैं क्योंकि वे सत्ता में नहीं आ पाने से हताश हैं।

हालांकि, नवीन ने बुधवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा उनकी स्वास्थ्य स्थिति को लेकर उठाए गए सवाल का भी जवाब दिया। उन्होंने कहा, कुछ दिन पहले प्रधानमंत्री ने कहा था कि वह मेरे अच्छे दोस्त हैं, अगर उन्हें मेरी सेहत की चिंता होती तो वह मुझे फोन करके बात करते, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया और इसके लिए ऐसा कह रहे हैं, चुनावी सभा में उनका वोट बैंक केलिए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023